नास्तिक्ता-सफलता की घोषणा है या विफलता की?

लेखक:

फ़ातिन सब्री

2021

www.fatensabri.com

faten@fatensabri.com

faten.sabri@yahoo.com

दिल की आवाज़

आत्मा की पुकार!

मेरी पढ़ी हुई बातों में से जो मुझे पसंद आये उन्ही में से निम्नलिखित वाक्य भी है:

"जब नापोलि कलाकार कार्लिनिज (karlinija) के प्रदर्शन से झूम रहे थे, तो उस समय एक व्यक्ति उस शहर के एक प्रसिद्ध डॉक्टर के पास अत्यधिक उदासी-अवसाद- की दवा के बारे में पूछने आया, तो डॉक्टर ने उसे मनोरंजन खोजने और कार्लिनिज के शो में जाने की सलाह दी, तो रोगी ने उत्तर दिया: मैं ही कार्लिनिज हूँ"।[1]

लेखक ने आगे नोट के तौर पर कहा:

"एक गहरी आस्था वाला आस्तिक और एक नास्तिक मनश्चिकित्सीय क्लीनिकों में नहीं जाते हैं, केवल खोजने वाले एवं संदेह पैदा करने वाले (जाते हैं)।

[1] "हुरूबी इला अल-हुर्रियात" नमी पुस्तक से, लेखक: अली इज़ेतबेगोविच, बोस्निया और हर्जेगोविना गणराज्य के पहले राष्ट्रपति और इस्लामी दार्शनिक।

मोमिन ढूँढ़ते हैं और पा जाते हैं, नास्तिक न ढूँढ़ते हैं न पाते हैं, और तीसरे प्रकार के वे लोग होते हैं जो ढूँढ़ते तो हैं, मगर पाते नहीं हैं। अल्लाह के बग़ैर ज़िन्दगी एक मशीन बन जाती है और ऐसी हो जाती है जैसे ज़िन्दगी हो ही नहीं। यदि आप कहें कि मैं सुबह मेट्रो गया, उसपर सवार हुआ, फिर विश्वविद्यालय पहुँचा, क्लास में बैठा और वापिस घर पहुँच गया। ये वाक्यांश उपन्यास या लघुकथा होने के लिए उपयुक्त नहीं हैं, क्योंकि यह अच्छाई और बुराई के तत्वों से रहित हैं। पूरे इतिहास में कोई भी ऐसा उपन्यास नहीं है जो अच्छाई और बुराई के तत्वों से रहित हो, क्योंकि वे दोनों मानव अस्तित्व का रहस्य और तकलीफ़ (अर्थात: मनुष्य को इक व्यवस्था के अधीन किए जाने) का राज़ हैं"।

लेखका जिस (तकलीफ़) के बारे में बात कर रही है, वह मानव आत्मा के अंदर दबी भावना है, जो उसे सही काम करने और गलत से बचने के लिए प्रेरित करती है और उसी के आधार पर हिसाब एवं दंड होगा।

खोज यात्रा:

कुछ लोग सोचते हैं कि बुनियादी तौर पर हर चीज़ अर्थहीन है, इस प्रकार हम मर्ज़ी का जीवन पाने के लिए, अपने लिए अर्थ खोजने के लिए स्वतंत्र हैं। हमारे अस्तित्व के उद्देश्य से इंकार करना खुद को धोखा देना है, जैसे हम खुद से कह रहे हों "चलो इस जीवन का कोई उद्देश्य फ़र्ज़ करते हैं"।

जैसे हमारी स्थिति उन बच्चों की तरह हो जो खेल में डाक्टर, नर्स या माँ-बाप होने का दिखावा करते हैं। हम उस समय तक सफल नहीं हो सकते जबतक कि हम अपने जीवन के लक्ष्य को न जान लें।

यदि किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध किसी लग्ज़री ट्रेन में बिठा दिया जाए, वह खुद को प्रथम श्रेणी में पाए, शानदार और आरामदायक अनुभव, परम विलासिता, क्या वह अपने इस यात्रा से खुश होगा, उसके मन में उठ रहे इन जैसे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए बिना कि:

मैं ट्रेन में कैसे पहुंचा? यात्रा का उद्देश्य क्या है? मैं कहाँ जा रहा हूँ? यदि ये प्रश्न अनुत्तरित रहें तो वह कैसे प्रसन्न हो सकता है?

भले ही वह अपने अधिकार की सभी विलासिताओं का आनंद लेना शुरू कर दे, वह कभी भी सच्चा और सार्थक सुख प्राप्त नहीं करेगा। क्या इस यात्रा का स्वादिष्ट भोजन उसे इन सवालों को भूलाने के लिए पर्याप्त है? इस तरह की खुशी अस्थायी और नकली स़ाबित होगी। इन महत्वपूर्ण सवालों के जवाब खोजने (की ज़रूरत) को जानबूझकर अनदेखा करके ही इस प्रकार की ख़ुशी हासिल की जा सकती है। यह नशे के कारण झूठे परमानंद की हालत की तरह है जो व्यक्ति को मृत्यु की ओर ले जाती है। इस प्रकार, मनुष्य को सच्चा सुख तब तक प्राप्त नहीं होगा जब तक कि वह इन अस्तित्वगत प्रश्नों के उत्तर न खोज ले।

अंग्रेज विचारक जॉन लॉक कहते हैं:

"यदि मनुष्य की सारी आशा इस संसार तक ही सीमित हो, और अगर हम केवल इस दुनिया ही में जीवन का आनंद लेने वाले हों, तो माता-पिता और बच्चों की कीमत पर भी ख़ुशी की तलाश करना न तो अजीब है और न ही अतार्किक"।

अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच:

आज ब्रह्मांड के एक निर्माता के अस्तित्व के कई खंडनकर्ता मानते हैं कि प्रकाश समय के बाहर है। लेकिन वह इस बात को स्वीकार नहीं करते कि सृष्टिकर्ता समय और स्थान के नियम के अधीन नहीं है, इस अर्थ में कि सृष्टिकर्ता हर चीज से पहले और हर चीज के बाद है और कोई भी चीज़ उसे घेर नहीं सकती।

उनमें से कई लोग इस बात को तो मानते हैं कि जब जुड़े हुए अणु अलग होते हैं तो उस समय भी एक दूसरे के संपर्क में लगातार रहते हैं, जबकि वे इस विचार को स्वीकार नहीं करते हैं कि सृष्टिकर्ता, अपने ज्ञान से, अपने बंदों के साथ होता है वे जहां भी जाते हैं। वे इस बात को तो मानते हैं कि उनके पास बुद्धि है उसे देखे बिना ही, जबकि वे सृष्टिकर्ता का इंकार कर देते हैं क्योंकि वे उसे देख नहीं पाते।

उनमें से कई लोगों ने स्वर्ग और नर्क में विश्वास करने से भी इनकार कर दिया, जबकि दूसरे संसारों के अस्तित्व को मान लिया जिन्हें उन्हों ने देखा ही नहीं। उन्हें भौतिक विज्ञान ने सिखाया कि उन चीजों पर विश्वास करें जो अस्तित्व में भी नहीं हैं, जैसे कि

मृगतृष्णा, तो वे उन्हें मानते हैं और स्वीकार करते हैं। परन्तु मृत्यु के समय, न तो भौतिकी और न ही रसायन विज्ञान से मनुष्यों को लाभ होगा, क्योंकि इन विज्ञानों ने तो उन से अनस्तित्व का वादा किया है।

अल्लाह के अस्तित्व को नकारने वाले, और अल्लाह एवं उसकी पुस्तक में विश्वास करने वाले के बीच यही अंतर है। नास्तिक ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता पर ईमान रखने वाले को मंदबुद्धि व्यक्ति कहता है क्योंकि वह ऐसी चीज़ पर ईमान रखता है जिसे उसने नहीं देखा है। जबकि मोमिन उस चीज़ पर ईमान रखता है जो उसके सम्मान को बढ़ाती है एवं उसके दर्जे को ऊँचा करती है। जबकि नास्तिक जो भौतिक एवं रसायन की पुस्तकों का महिमामंडल करता है, अनस्तित्व पर ईमान रखता है, जो कि उसके सम्मान को कम करता है।

सृष्टिकर्ता का अस्तित्व:

ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता के अस्तित्व में विश्वास इस तथ्य पर आधारित है कि चीजें बिना कारण के प्रकट नहीं होती हैं, और न ही इत्तिफ़ाक़ के लिए संभव है कि वह ब्रह्मांड को पैदा करे। क्योंकि इत्तिफ़ाक़ कोई मुख्य

कारण नहीं है, बल्कि यह एक द्वितीयक परिणाम है जो अन्य कारकों (समय, स्थान, पदार्थ और ऊर्जा) की उपलब्धता पर निर्भर करता है, ताकि इन कारकों से कोई चीज़ इत्तिफा़क़ से बन जाए। अतः किसी चीज़ की व्याख्या के लिए इत्तिफा़क़ शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि इत्तिफ़ाक़ कोई चीज़ नहीं।

हक़ीक़त का एहसास:

प्रायोगिक भौतिक विज्ञान पर पूर्ण विश्वास की परेशानी यह है कि यह ज्ञान परिवर्तनशील आधार है। हर दिन नई खोजें की जाती हैं जो पिछले सिद्धांतों का खंडन करती हैं। कुछ जिसे हम विज्ञान मानते हैं वह अभी भी सैद्धांतिक है। बल्कि यदि हम मान लें कि सभी विज्ञान सिद्ध और सटीक हैं तब भी हमारा प्रॉब्लम ख़त्म नहीं होता है।

प्रायोगिक विज्ञान आजकल खोजकर्ता को सारी महिमा देता है और निर्माता की उपेक्षा करता है। उदाहरण स्वरूप - मान लीजिए कि कोई व्यक्ति एक कमरे में जाता है और अविश्वसनीय क्रम और समरूपता के साथ, बहुत सावधानी से चित्रित एक सुंदर पेंटिंग की

खोज करता है। फिर बाहर निकल कर लोगों को उसकी ख़बर देता है। सभी लोग पेंटिंग की खोज करने वाले व्यक्ति से इतने प्रभावित हुए कि अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न ही पूछना भूल गए कि: "इसे किसने चित्रित किया?"

यही इंसान कर रहा है, वे प्रकृति और अंतरिक्ष के नियमों की वैज्ञानिक खोजों से इतने प्रभावित हैं कि उसको भूल गए जिसने ब्रह्मांड, ऊर्जा, पदार्थ आदि के नियमों का निर्माण किया है। सभी वैज्ञानिक क़ानूनों की खोज करते हैं, उन्होंने ये क़ानून नहीं बनाए हैं। इसे सृष्टिकर्ता ने बनाया है।

कोई व्यक्ति केवल इस लिए लेखक का इंकार नहीं कर सकता है कि उसने पुस्तक को जान लिया है। वैज्ञानिक विकल्प नहीं हैं, विज्ञान ने ब्रह्मांड के नियमों की केवल खोज की है, लेकिन उन्हें स्थापित नहीं किया है, बल्कि सृष्टिकर्ता ने उन्हें स्थापित किया है।

मोमिनों में से बहुतों के पास भौतिक और रसायन विज्ञान का उच्च ज्ञान है, लेकिन उन्हें पता है कि इन ब्रह्मांडीय नियमों के पीछे एक महान सृष्टिकर्ता है। भौतिकवादी जिस भौतिक विज्ञान में विश्वास करते हैं,

उसने अल्लाह द्वारा बनाए गए नियमों की खोज की है। परन्तु भौतिक विज्ञान ने इन नियमों को नहीं बनाया है। अल्लाह द्वारा बनाए गए नियमों के बिना वैज्ञानिक कुछ नहीं पा सकते जिसका वे अध्ययन करें। जबकि ईमान मोमिन के लिए दुनिया व आख़िरत दोनों स्थान में लाभदायक है।

जब किसी व्यक्ति को गंभीर फ्लू या तेज बुखार होता है, तो कभी कभी वह पीने के लिए एक ग्लास पानी तक नहीं पहुंच पाता है, फिर वह अपने सृष्टिकर्ता के साथ अपने रिश्ते से कैसे लापरवाह हो सकता है?

विलियम जेम्स कहता है "महासागर की उँची उँची शोर मचाती लहरें कभी भी गहरे तल की शांति को भंग नहीं करती हैं, और न ही उसकी स्थिरता को खतम करती हैं। इसी तरह, वह व्यक्ति जिसकी अल्लाह में आस्था गहरी हो, अस्थायी, उथले परिवर्तनों से उसकी शांति भंग नहीं होती है। एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति चिंता से दूर होता है, अपना संतुलन कभी नहीं खोता एवं हमेशा उसके विरोध आने वाली हवाओं का मुक़ाबला करने के लिए तैयार रहता है।

धर्म क्यों?

धर्मशास्त्र के प्रोफेसर हैंस श्वार्ज कहते हैं:

हालांकि विज्ञान महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका उपयोग विध्वंस के लिए किया जा सकता है जैसे कि इसका उपयोग पुनर्निर्माण के लिए किया जा सकता है। यहाँ ईमान की महत्वपूर्ण भूमिका आती है, क्योंकि व्यावहारिक अनुभव सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता है।

उन्होंने आगे कहा:

"आस्था और ज्ञान, हर एक को दूसरे की जरूरत है और वैज्ञानिकों को यह स्वीकार करना चाहिए कि वे प्रकृति के जिन पहलुओं पर नज़र रखते हैं उनके बीच गहरे संबंधों को समझने में सक्षम होने के लिए कभी-कभी ईमान का सहयोग लेते हैं"।

हैंस श्वार्ज का मानना है कि वैज्ञानिकों के पास उतने तथ्य और उत्तर नहीं हैं जैसा कि वे दावा करते हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण वैज्ञानिकों को हर दिन पेश आने वाले नए नए प्रश्न हैं, विशेषकर वे वैज्ञानिक जो

जीवन की असल की खोज कर रहें हैं। वे जब भी किसी नतीजे पर पहुँचते हैं तो दूसरे ही दिन कोई नयी खोज उसे रद्द कर देती है।

हमारे जीवन के स्रोत और लक्ष्य का प्रश्न, जिसका उत्तर भौतिक विज्ञान नहीं दे सकता, उत्तर देने के लिए तत्वमीमांसा या अध्यात्मविज्ञान को सौंप दिया जाता है। वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण हुई हिरोशिमा दुर्घटना और अन्य आपदाओं के कारण विज्ञान ने अपनी विश्वसनीयता खो दी। और दार्शनिक कार्ल जसपर्स और अन्य ने भौतिक विज्ञान को अंधविश्वास कहा है।

हम इससे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यदि हम तर्क के लिए स्वीकार करते हैं कि विज्ञान ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है: कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति कैसे हुई? पर उसके लिए वैज्ञानिक विकास को बनाए रखते हुए जीवन की उत्पत्ति और उद्देश्य और नैतिकता के सवालों का जवाब देना संभव नहीं है, मगर केवल विज्ञान और धर्म के बीच सामंजस्य और एकीकरण के माध्यम से।

भौतिक विज्ञान से इंसान राकेट बना सकता है, लेकिन इस विज्ञान से वह न तो किसी पेंटिंग की सुंदरता का निर्णय कर सकता है, न ही चीजों के मूल्य का अनुमान लगा सकता है और न ही वह हमें अच्छाई और बुराई का अंतर समझाता है। भौतिक विज्ञान के द्वारा हम जानते हैं कि गोली मारती है, लेकिन हम यह नहीं जान सकते कि इसका इस्तेमाल दूसरों को मारने के लिए करना ग़लत है।

प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा है:

"विज्ञान नैतिकता का स्रोत नहीं हो सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विज्ञान के लिए नैतिक आधार हैं। लेकिन हम नैतिकता की वैज्ञानिक नींव के बारे में बात नहीं कर सकते हैं। नैतिकता को विज्ञान के नियमों और समीकरणों के अधीन करने के सभी प्रयास विफल रहे हैं और विफल रहेंगे"।

प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट कहते हैं:

"माबूद (पूज्य) के अस्तित्व का नैतिक प्रमाण न्याय के अनुसार है। क्योंकि यह अनिवार्य है कि अच्छे आदमी को पुरस्कृत किया जाए तथा बुरे आदमी को दंडित किया जाए। और यह केवल एक उच्च स्रोत की उपस्थिति में हो सकता है, जो प्रत्येक मानव को उसके द्वारा किए गए कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराए। उसी प्रकार (उपर्युक्त नैतिक) प्रमाण पुण्य एवं सफलता को जमा करने की संभावना के तकाज़ा पर स्थापित है। क्योंकि यह एक अलौकिक अस्तित्व के साए ही में हो सकता है, जो हर चीज़ का जानने वाला है एवं हर चीज़ पर संप्रभुता रखता है। और इसी उच्च स्रोत एवं अलौकिक अस्तित्व का नाम माबूद (पूज्य) है"।

ग़ुलामी से मुक्ति:

अनिवार्य रूप से, यदि हम एक सृष्टिकर्ता की इबादत नहीं करेंगे तो उसका परिणाम यह होगा कि हम बहुत सारे पूज्यों को पूजने लगेंगे। हृदय या तो दुनिया के मामलों में से किसी मामला से जुड़ा होगा, जिसे पाने की वह कोशिश करेगा, या अपने सृष्टिकर्ता और उसके अस्तित्व के होने से जुड़ा होगा। इसी लिए कभी कभी

हमारी इच्छाएं और ख़्वाहिशें हमें ग़ुलाम बना लेती हैं और हम अनुभव भी नहीं कर पाते। जबकि महान अल्लाह एवं आख़िरत से हमारा जुड़ाव हमें दूसरों की ग़ुलामी से निकाल बाहर करता है। एवं सारे संसारों का पालनहार ही हमारा सृष्टिकर्ता है और यह उसी का अधिकार है कि हम उसकी ओर लौटें तथा उसी से मदद माँगें।

बहुत से लोग शोहरत और फैशन की ओर आकर्षित होते हैं, जैसे कि विज्ञापन और सोशल मीडिया लोगों का ध्यान अत्यधिक आकर्षित करते हैं। असंपूर्ण अवधारणाओं को फैलाने में इनकी बहुत बड़ी भूमिका है और दूसरे दर्जे की चीज़ों पर ध्यान देने और प्राथमिकताओं को अनदेखा करने को कहते हैं। और यह हमारी परेशानियों को बढ़ाता है और हमें एक अशांत और दुखी जीवन जीने की ओर ले जाता है।

साथ ही, कुछ सामाजिक मानदंड और अन्य पारिवारिक दबाव, जो हमें विरासत में मिली परंपराओं और अवधारणाओं का पालन करने के लिए मजबूर

करते हैं, यह हमें हमारे जीवन के उद्देश्य और सृष्टिकर्ता के प्रति हमारे कर्तव्य से दूर करता है।

दायित्व और जिम्मेदारी:

ब्रह्मांड के निर्माता के अस्तित्व में विश्वास एक प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी है। विश्वास विवेक को सचेत करता है, और मोमिन को अपने हर बड़े और छोटे काम के लिए खुद की समीक्षा करने पर उभारता है। मोमिन ज़िम्मेदार होता है अपने आपका, अपने परिवार का, अपने पड़ोसी का यहाँ तक कि मुसाफिर का। वह साधनों को अपनाता है और अल्लाह पर भरोसा करता है। और मैं नहीं समझता हूँ कि यह अफीम के नशेड़ियों की विशेषताओं में से है जिन से आज विश्वासियों को कलंकित किया जाता है।

लोगों के लिए वास्तविक अफीम आस्था नहीं, बल्कि नास्तिकता है। क्योंकि नास्तिकता अपने अनुयायियों को भौतिकवाद, सृष्टिकर्ता से अपने संबंध के बारे में न सोचने, धर्म का इंकार करने तथा जिम्मेदारियों और कर्तव्यों का परित्याग करने की ओर बुलाती है। इसी प्रकार यह अंजाम से बेख़बर होकर

केवल वर्तमान में जीने को कहती है। यानी उनका जो मन चाहे करें बिना इस विश्वास के कि उनपर कोई अल्लाह का रखवाल, या उनके कामों का हिसाब रखने वाला निर्धारित है, या कोई पुनरुत्थान या हिसाब किताब है। क्या वास्तव में यह नशेड़ियों की विशेषता नहीं है।

आत्मा का उच्च स्थान:

मेरी पढ़ी हुई बातों में से जो मुझे पसंद आईं उन्ही में से निम्नलिखित इबारत भी है;

"जब कोई व्यक्ति अपराध करता है, तो आरोपी का वकील (अपराथ के) इरादा के न होने को साबित करने की कोशिश करता है। हालांकि भौतिक दृष्टिकोण से अपराध हो चुका होता है, और अपराधी उसे स्वीकार भी करता है। परन्तु क़ानून इरादा, नियत एवं अपराध करते समय दिल की हालत को जानने के लिए हस्तक्षेप करता है।

यहाँ हम आत्मा को निरी भौतिक घटना से ऊँचे स्थान पर रखते हैं।

इस प्रकार वास्तव में यहाँ हम दुनिया में क्या हुआ, उसको न आंक कर, दिल के अंदर क्या हुआ, उसको आंकते हैं।

और यह मनुष्य और संसार के बीच मूलभूत अंतर्विरोध को दर्शाता है। इस लिए नैतिकता का एक मूल्य होना चाहिए, जो न निरी भौतिक मानकों द्वारा मापा जाए और न प्राकृतिक क़ानूनों के अधीन हो।

नैतिक व्यवहार, त्याग, आदर्श, तप और परोपकार माबूद (पूज्य) के अस्तित्व के (प्रमाणित होने के) संबंध में इन नैतिकताओं का या तो कोई अर्थ नहीं है या इनका कोई अर्थ है।

जिस दिन, लाभ नहीं देगा कोई धन और न संतान;

कोरोना संकट में हम ने एसे मुर्दों को देखा जिनके बारे में कोई नहीं जानता था। वृद्ध घर बेजान लाशों से पटे पड़े रहे, जिनकी ज़िम्मेदारी उनके आसपास के किसी ने नहीं ली। जो रास्ते में मरे, उसके बारे भी कोई नहीं जानता। दौलत होने के बावजूद इलाज

की प्रतीक्षा करते रहे। बड़ों ने छोटों के लिए बलिदान दिया। मरीज अस्पताल के बिस्तर के लिए दौड़-भाग करते रहे। मानो यह स्थिति पुनरुत्थान के दिन के दृश्यों के समान एक दृश्य प्रस्तुत कर रही थी।

कोरोना संकट ने लोगों के दिलों से बहुत सारे भ्रम दूर कर दिए एवं उनके झूठे माबूद जिनकी वे अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते थे, एक के बाद एक ध्वस्त हो गए। जो धन की पूजा करता था, उसका धन उसके काम न आया। जो इस गुमान में था कि वह भौतिक विज्ञान के द्वारा निजात पा जाएगा, उसे ज्ञान से भी कोई लाभ न प्राप्त हुआ। जो पत्थर या मूर्ती का वसीला पकड़ता था, वह संक्रमण के डर से उनके पास नहीं जाता था। हम ने बहुत बार यह भी सुना कि पादरियों ने अपने अनुयायियों को सीधे भगवान से माँगने को कहा, और उनके पास आने से बचने के लिए कहा। इस प्रकार पूरी दुनिया में केवल "ला इलाहा इल्लल्लाहु" (अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है) का सूरज चमकने लगा।

इस में संदेह नहीं है कि इस तरह की स्थिति इंसान को सारे संसारों के रब की तरफ लौटने एवं उस से मदद माँगने पर मजबूर करती है। तथा (इस) हदीस शरीफ़ के शब्द अपने ख़ूबसूरत अर्थों के साथ प्रकट होते हैं:

"जब मांगो तो केवल अल्लाह से मांगो तथा जब सहायता मांगो तो केवल अल्लाह से मागो"।

मैं अपनी पुस्तकों में हमेशा उन शब्दों का उल्लेख करता हूं जो मुझ से एक स्पेनिश बूढ़े आदमी ने कहे थे: हम पश्चिमी देशों में न अल्लाह की इबादत करते हैं और न ईसा की, बल्कि हम लोग औरतों एवं धन की इबादत करते हैं। यद्यपि उन्होंने मुझे यह मज़ाक के तौर पर कहा था, परन्तु उनके शब्दों में बहुत सारी वास्तविकता है। और उनके यह शब्द अभी मुझे याद आ रहे हैं, पश्चिम में सभी स्वार्थी हैं।

इस जीवन में हमारे पास एक विकल्प के अलावा और कोई विकल्प नहीं है, कि हम सृष्टिकर्ता के आह्वान को स्वीकर करते हुए उसपर ईमान लाएं एवं उसके सामने आत्मसमर्पण करें। या तो अस्तित्व (में

विश्वास करें) या अनस्तित्व (में)। या तो हम दुनिया व आख़िरत की भलाई कमाएं या दुनिया से राज़ी होकर अपने आपको नाश कर लें और हमारा ठिकाना जहन्नम हो।

मैं इस सारांश में, ब्रह्मांड के रचनाकार के अस्तित्व का प्रमाण प्रस्तुत करना चाहता हूँ, सृष्टिकर्ता के कलाम से, सृष्टिकर्ता द्वारा स्थापित ब्रह्माण्ड के नियमों से तथा सृष्टिकर्ता द्वारा निर्मित ब्रह्मांड में मौजूद चीज़ों से। इसी प्रकार मैं पेश करूंगा अल्लाह के अस्तित्व में विश्वास रखने वाले कुछ वैज्ञानिकों की बातें, साथ ही सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का इंकार करने वालों की बातें, जो अल्लाह तआला के अस्तित्व की पुष्टि करती हैं।

यह पुस्तक यह भी स़ाबित करेगी कि सृष्टिकर्ता के इंकार का विचार ही बुद्धि, स्वभाव एवं आधुनिक विज्ञान के विरुद्ध है, ईमान नहीं, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं।

मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह मुझसे इस पुस्तक को स्वीकार करे, इसे मार्गदर्शन

एवं उस समाधान तक पहुँचने का स्रोत बनाए, जिसकी तलाश में हैं सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का इंकार करने वाले, क्योंकि वह अपनी नास्तिक्ता के कारण इस समाधान तक पहुँचने में अपनी विफलता का एलान कर चुके हैं।

ब्रह्मांड की रचना किसने की?

यदि वैज्ञानिक मोमिन होगा: तो कहेगा, निःसंदेह, अल्लाह, परन्तु एक नास्तिक वैज्ञानिक बोलेगा: एक सुपर-इंजीनियर, या बुद्धिमान बैक्टीरिया, या अचानक, या वैज्ञानिकों के समूह या किसी अन्य ग्रह के एलियंस ने एक प्रयोग किया, जिससे ब्रह्मांड का जनम हुआ।

तो अल्लाह तआला ने इसका उत्तर दिया:

"अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला और वही हर चीज़ की देख-भाल करने वाला है"।

सूरा अल-ज़ुमर: 62

"वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उसकी संतान कहाँ से हो सकते हैं, जबकि उसकी पत्नी नहीं है। तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है और वह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानता है।

"वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का

उत्पत्तिकार है। अतः, उसी की इबादत करो तथा वही प्रत्येक चीज़ का अभिरक्षक है"।

सूरा अल-अन्आम: 101, 102

"तथा निश्चय ही हमने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को, और जो कुछ दोनों के बीच है, छः दिनों में, और हमें कोई थकान नहीं हुई"।

सूरा क़ाफ़: 38

रचनाकार कौन है?

"अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह जीवित तथा पूरी कायनात के निज़ाम को संभाले हुए है। उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, वह सब जानता है। लोग उसके ज्ञान में से उतना ही जान सकते हैं, जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोए हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च, महान है"।

सूरा अल-बक़रा: 255

रचनाकार की रचना किसने की?

"वही प्रथम, वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है, और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है"।

सूरा अल-हदीद: 3

"उसके जैसी कोई वस्तु नहीं है, एवं वह सुनने वाला तथा देखने वाला है"।

सूरा अश्-शूरा:11

उसके अस्तित्व की वास्तविकता क्या है?

"तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की! ये (बात) ऐसे ही सच है, जैसे तुम बोल रहे हो"।

सूरा अल-ज़ारियात: 23

"उनके रसूलों ने कहा: क्या उस अल्लाह के बारे में कोई संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है"।

सूरा इब्राहीम: 10

उसके क्या नाम एवं विशेषताएँ हैं?

"वह अल्लाह ही है, जिसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह गुप्त तथा प्रत्यक्ष हर चीज़ का जानने वाला है, वह सबसे बड़ा दयालु एवं सबसे बड़ा कृपावान है।

वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह सबका स्वामी, अत्यंत पवित्र, सब ऐबों से साफ़, अमन देने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला एवं बड़ा ही हो कर रहने वाला है, पाक है अल्लाह उस शिर्क से जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह पैदा करने वाला, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूप देने वाला है। उसी के शुभनाम हैं। जो कुछ आकाशों एवं धरती में है, उसी का गुणगान करता है, एवं वह प्रभावशाली तथा हिक्मत वाला है"।

सूरा अल-हश्रः 22-24

उसके कार्यों की जानकारी:

"उसका आदेश, जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करना चाहे, बस यह कह देना है कि हो जा। तो तत्क्षण वह हो जाती है"।

सूरा यासीन: 82

"तथा वही है, जो अपने बनदों पर पूरा अधिकार रखता है और तुमपर रक्षकों को भेजता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरने का समय आता है, तो हमारे फ़रिश्ते उसका प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी कोताही नहीं करते"।

सूरा अल-अन्आम: 61

"तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे बिना कुछ नहीं चाह सकते।"

सूरा अल- तकवीर: 29

पूरा प्रबंधन उसी का है:

वह तदबीर करता है प्रत्येक कार्य की आकाश से धरती तक, फिर प्रत्येक कार्य, ऊपर उसके पास जाता

है एक दिन में, जिसका माप एक हज़ार वर्ष है, तुम्हारी गणना से (अर्थात यह नीचे उतरना तथा ऊपर जाना एक हज़ार साल का रास्ता है)।

सूरा अल-सजदा: 5

सारा मामला और आदेश उसी के हाथ में है:

"अल्लाह ही के अधिकार में आकाशों तथा धरती की छिपी हुई चीज़ों का ज्ञान है, और सब विषय उसी की ओर लोटाये जाते हैं। अतः आप उसी की इबादत (वंदना) करें और उसी पर निर्भर रहें। आपका पालनहार उससे अचेत नहीं है, जो तुम कर रहे हो"।

सूरा हूद: 123

"तथा जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, सब अल्लाह ही के लिए है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं"।

सूरा आल-ए-इमरान: 109

सम्पूर्ण बेनियाज़ी उसकी विशेषता है:

"और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों। और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं"।

सूरा अल हिज्र: 21

"आकाशों एवं धरती के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, परन्तु यस मुनाफ़िक़ इस बात को नहीं समझते हैं"।

सूरा अल-मुनाफ़िक़ून: 7

"तथा आपका पालनहार निस्पृह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ख़त्म करके तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये, जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों के संतान से पैदा किया है"।

सूरा अल-अन्आम: 133

"हे मनुष्यो! तुम सभी अल्लाह के भिक्षु हो तथा अल्लाह ही बेनियाज़ एवं प्रशंसित है"।

सूरा फ़ातिर: 15

"तथा जिसने कुफ़्र किया, तो (जान लें) कि अल्लाह सारे संसारों से बेनियाज़ है"।

[सूरा आल-ए-इमरान: 97]

अल्लाह के पास ही परोक्ष की चाबियाँ हैं:

"और उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुंजियाँ हैं। उन्हें केवल वही जानता है तथा जो कुछ थल और जल में है, वह सबका ज्ञान रखता है, और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है, और न कोई अन्न का दाना जो धरती के अंधेरों में हो और न कोई आर्द्र (भीगा) और न कोई शुष्क (सूखा) है, परन्तु वह एक खुली पुस्तक में अंकित है"।

सूरा अल-अनआम: 59

उसके पास असीमित क्षमता है:

"(ऐ नबी!) "कहोः ऐ अल्लाह, ऐ पूरे ब्राह्मांड के स्वामी! तू जिसे चाहे, राज्य दे और जिससे चाहे, राज्य छीन ले तथा जिसे चाहे, सम्मान दे और जिसे चाहे, अपमानित कर दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निःसंदेह तू हर चीज़ पर सक्षम है।

तू रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर देता है, और जीव को निर्जीव से निकालता है तथा निर्जीव को जीव से निकालता है और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है"।

सूरा आल-ए-इमरान: 26,27

ब्रह्मांड का जन्म कैसे हुआ?

"वह आकाशों तथा धरती का आविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है, तो उसके लिए बस ये आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है"।

सूरा अल-बक़रा: 117

अलग अलग करने का चरण:

"और क्या काफ़िरों ने यह नहीं देखा कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुए थे, तो हमने दोनों को अलग- अलग किया, तथा हमने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज़ को? फिर भी क्या वे (इस बात पर) विश्वास नहीं करते"?

सूरा अल-अंबिया: 30

"सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो आकाशों तथा धरती का उत्पन्न करने वाला है, (और) दो-दो, तीन-तीन, चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को संदेशवाहक

बनाने वाला है। वह उत्पत्ति में जो चाहता है, अधिक करता है। निःसंदेह अल्लाह जो चाहे, कर सकता है।"

सूरा फ़ातिर: 1

निम्नलिखित क़ुरआन की आयतें अगली बातों की पुष्टि करती हैं:

सभी आकाश, धरती एवं कायनात एक ही में मेले थे जिसको "रत्क़" कहा जाता है, जिसका अर्थ है ऐसी चीज़ जो कसकर एक दूसरे को पकड़े हुए हो।

ब्रह्मांड "आकाश" का विस्तार।

"तथा आकाश को हमने बनाया है क्षमता से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं"।

सूरा अल-ज़ारियात: 47

पृथ्वी का स्थान और आकाश का धुँआ से उद्गम,

"आप कह दीजिए कि क्या तुम उस अल्लाह का इंकार करते हो और उसके लिए साझेदार बनाते हो,

जिसने दो दिनों में ज़मीन पैदा की, वह सारे संसार का रब है।

और उसने ज़मीन में उस के ऊपर से पहाड़ गाड़ दिया, और उस में बरकत रख दी, और उस में उन के आहार का प्रबंध भी कर दिया, केवल चार दिनों में, पूरा-पूरा जवाब है प्रश्न करने वालों के लिए।

फिर उसने आसमान का इरादा किया, और वह धुआँ था तो उसने उससे और ज़मीन से कहा, तुम दोनों आओ, खुशी से या नाखुशी से, दोनों ने कहा हम खुशी से उपस्थित हैं।

तथा उसने सात आकाशों को दो दिनों में बना दिया, तथा प्रत्येक आकाश में उसका आदेश वह्यी कर दिया तथा हमने समीप (संसार) के आकाश (अर्थात पहला आसमान) को दीपों (तारों) से सुसज्जित किया, तथा सुरक्षा के लिए। यह अति प्रवलशाली सर्वज्ञ की योजना है"।

सूरा फ़ुस़्सिलत: 9-11

इन आयतों से यह स्पष्ट होता है; कि पहले और दूसरे दिन धरती की उत्पत्ती हुई।

तीसरे और चौथे दिन पहाड़ अपनी ऊँचाई के साथ प्रकट हुए और धरती पर बसने वालों के लिए खाने पीने की व्यवस्था (पेड़ पौधे तथा जानवरों की उत्पत्ति) हुई।

क़ुरआन ने 1400 से अधिक वर्ष पहले धुआं से आकाश की उत्पत्ति की बात कही थी, जबकि इंटरस्टेलर डस्ट की खोज तब तक नहीं हुई जब तक कि आधुनिक युग में जर्मनों ने डस्ट डिटेक्टर नहीं बनाए। जहाँ तक इंटरस्टेलर डस्ट की बात है तो वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि हमारी दुनिया एक मिट्टी की दुनिया है तथा वर्तमान ब्रह्मांडीय धूल आकाश के धुएं का एक अवशिष्ट भाग है।

प्रायोगिक विज्ञान ने बताया है कि हमारी आकाशगंगा ब्रह्मांड के ऊपरी आधे भाग में स्थित है और ऊपर की ओर ढलान के साथ बढ़ रही है तथा हम ब्रह्मांड के विस्तार की ओर बढ़ रहे हैं।

समय एवं स्थान की पैदाइश:

"उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है, और उस (चाँद) के गंतव्य स्थान निर्धारित कर दिया, ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा ह़िसाब का ज्ञान कर लो। इनकी उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है, परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिए निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हों"।

सूरा यूनुस: 5

अल्लाह तआला आगे फ़रमाता है:

"बेशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक-दूसरे के पीछे निरन्तर आने-जाने में, उन नावों में, जो मानव के लाभ के साधनों को लिए, सागरों में चलती-फिरती हैं और वर्षा के उस पानी में, जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता है, फिर धरती को उसके द्वारा, उसके मरण् (सूखने) के पश्चात् जीवित करता है और उसमें प्रत्येक जीवों को फैलाता है तथा वायुओं को फेरने में और उन बादलों में, जो आकाश और धरती के बीच उसकी आज्ञा के अधीन रहते हैं,

(इन सब चीज़ों में) अगणित निशानियाँ (लक्ष्ण) हैं, उन लोगों के लिए, जो समझ-बूझ रखते हैं"।

सूरा अल-बक़रा: 164

सृष्टि का उद्देश्य क्या है?

"और मैं ने जिन्न और मनुष्य को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।"

सूरा अज़-ज़ारियात: 56

और अल्लाह ने फरमाया:

"वास्तव में जो कुछ धरती के उपर है, हम ने उनको उसके लिए शोभा बनाया है, ताकि उनकी परीक्षा लें कि उनमें कौन क्रम में अच्छा है"।

सूरा अल-कहफ़: 7

क्या सृष्टिकर्ता को मानव की आवश्यकता है?

"अल्लाह सारे संसारों से बेनियाज़ है"।

सूरा अल-अनकबूत: 6

विकासवाद की अवधारणा का सुधार:

इंसान का कोई अस्तित्व नहीं था।

"वास्तव में इन्सान पर ज़माने का एक वह समय भी गुज़र चुका है जबकि वह कोई उल्लेखनीय चीज़ न था"।

सूरा अल-इंसान: 1

सबसे पहले आदम -अलैहिस्सलाम- को मिट्टी से पैदा किया गया।

"और हमने मनुष्य को मिट्टी के सार से उत्पन्न किया है"।

सूरा अल-मोमिनून: 12

"जिसने बहुत सुन्दर बनाई जो चीज़ भी बनाई, और मिट्टी से मनुष्य की उत्पत्ति का आरंभ किया"।

सूरा अल-सजदा: 7

मानव के बाबा आदम का सम्मान:

"अल्लाह ने कहाः हे इब्लीस! किस चीज़ ने तुझे उसे सजदा करने से रोका, जिसे मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है"?

सूरा स़ाद: 75

"जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि वे आदम को सजदा करें, तो इब्लीस के सिवा सभी लोगों ने सजदा किया, उसने इंकार किया और घमंड किया, और वह काफ़िरों में से था"।

सूरा अल-बक़रा: 34

आदम -अलैहिस्सलाम- के संतान की पैदाइशः

"फिर बनाया उसका वंश एक तुच्छ जल के निचोड़ (वीर्य) से"।

सूरा अल-सजदा: 8

"फिर हमने उसे वीर्य बनाकर रख दिया एक सुरक्षित स्थान में।

फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुए रक्त में, फिर हमने उसे मांस का लोथड़ा बना दिया, फिर हमने लोथड़े में हड्डियाँ बनाईं, फिर हमने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अल्लाह, जो सबसे अच्छी उत्पत्ति करने वाला है"।

सूरा अल-मोमिनून: 13-14

"तथा वही है, जिसने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उसके वंश तथा ससुराल के संबंध बना दिये, आपका पालनहार अति सामर्थ्यवान है"।

सूरा अल-फ़ुरक़ान: 54

आदम -अलैहिस्सलाम- के संतान का सम्मान:

"और हमने आदम के संतान (मानव) को सम्मानित किया, और उन्हें थल और जल में यात्रा के लिए सवारी दिया, और उन्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की, और हमने उन्हें बहुत-सी उन चीज़ों पर प्रधानता दी, जिनकी हमने उत्पत्ति की है"।

सूरा अल- इसरा: 70

"वह आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उसने बनाए हैं तुम्हारी जाति में से तुम्हारे जोड़े तथा पशुओं के जोड़े। वह फैला रहा है तुम्हें उसमें। उसके जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सब कुछ सुनने- जानने वाला है"।

सूरा अश्-शूरा:11

आदम को विकल्प चुनने का इरादा दिया गया:

"और हमने कहाः ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो तथा इसमें से जिस स्थान से चाहो, मन के मुताबिक खाओ और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे"।

सूरा अल-बक़रा: 35

"आप कह दें कि यह तुम्हारे पालनहार की ओर से सत्य है, जो चाहे ईमान लाए एवं जो चाहे इंकार कर दे"।

सूरा अल-कहफ़: 29

ज्ञान द्वारा आदम -अलैहिस्सलाम- को श्रेष्ठता दी गई

"और उसने आदम को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन्हें फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा, मुझे इनके नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो"।

सूरा अल-बक़रा: 31

विकल्प की आज़ादी का परिणाम त्रुटि है:

"फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द पाए, तो उसने उसे क्षमा कर दिया। वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है"।

सूरा अल-बक़रा: 37

धरती पर ख़लीफा बनाने की एक परिचयात्मक कहानी:

"और (हे नबी! याद करो) जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा बनाने जा रहा हूँ। वे बोले: क्या तू उसमें उसे बनायेग, जो उसमें

उपद्रव करेगा तथा रक्त बहायेगा? जबकि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं! (अल्लाह) ने कहा: जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते"।

सूरा अल-बक़रा: 30

सृष्टिकर्ता का अस्तित्व और वैज्ञानिक कानूनों एवं सिद्धांतों के साथ उसका संबंध:

सृष्टिकर्ता के ज़िक्र से बचने के लिए इंटरकनेक्टेड सिस्टम को बेतरतीब प्रकृति से जोड़ा जाता है:

नास्तिक वैज्ञानिक सृष्टिकर्ता का इनकार करने के बावजूद विभिन्न नामों से उसकी ओर इशारा करते हैं जैसा कि (माँ प्रकृति, ब्रह्मांड के नियम, प्राकृतिक चयन "डार्विन का सिद्धांत" आदि)। और यह केवल धर्म के तर्क और सृष्टिकर्ता के अस्तित्व में विश्वास से भागने की नाकाम कोशिश है।

"वास्तव में, ये कुछ केवल नाम हैं, जो तुमने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं, अल्लाह ने उनका कोई प्रमाण नहीं उतारा है, वे केवल अनुमान तथा अपनी मनमानी पर चल रहे हैं, जबकि उनके पास उनके रब की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है"।

सूरा अल-नज्म: 23

मेरी पढ़ी हुई बातों में से जो मुझे पसंद आईं उन्ही में से निम्नलिखित इबारत भी है;

आधुनिक डार्विनवाद उत्परिवर्तन के माध्यम से जीवों की विशेषताओं में परिवर्तन के घटने पर निर्भर करता है, तथा उत्परिवर्तन कुछ और नहीं बल्कि आनुवंशिक सामग्री में (बिगाड़) हैं। इसका अर्थ यह है कि हम विश्वास करें कि क्रमिक त्रुटियों ने वह रचनात्मकता पैदा की है जो हम आज दुनिया में देख रहे हैं। यह उसी प्रकार है जैसे कि कोई बच्चा वर्षों तक कंप्यूटर सिस्टम से खेलता रहा, और उसके लगातार बेतरतीब कीबोर्ड को दबाने के कारण अचानक एक नया एवं बेहतर सिस्टम पैदा हो गया हो।

बृहत-विकास (macroevolution) के सिद्धांत को बेतरतीबी की विशेषता से विशेषित करने का अर्थ है कि:

हम नहीं जानते कि विकास के पीछे क्या है,

हम नहीं जानते विकासवादी घटनाओं के तंत्र को,

हम नहीं जानते कि वह किस पैटर्न का अनुसरण कर रहा है,

और न हम इस बृहत विकास की घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं।

इन तमाम "नजानकारियों" के बावजूद कुछ लोग बृहत विकास को सटीक वैज्ञानिक सिद्धांत समझते हैं, यह बृहत विकास उस में विश्वास करने वालों के लिए एक "ब्लैक बॉक्स" प्रणाली है।

नास्तिक्ता के अनुयायियों के अनुसार विकास मालूम है, कैफ़ियत नमालूम है, उस पर विश्वास करना अनिवार्य है और उसके संबंध में सवाल करना इल्मी बिद्अत है, अर्थात बिना विवाद के एवं बिना तर्क के ईमान।

ब्रह्मांड के नियमों के स्रोत को समझने की अनिच्छा को स्रोत के अस्तित्व को नकारने के बहाने के रूप में लिया जाता है;

"बल्कि उन्होंने उस (क़ुरआन) को झुठला दिया, जो उनके ज्ञान के घेरे में नहीं आया, और न

उसका परिणाम उनके सामने आया। इसी प्रकार, उन्होंने भी झुठलाया था, जो इनसे पहले थे। तो देखो कि अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ"?

सूरा यूनुस: 39

वे लोग कहते हैं: तुम मोमिन लोग "अंतराल के माबूद- God of the gaps" के सिद्धांत को अपनाते हो, अर्थात ;जब कभी विज्ञान में कोई शून्य स्थान पाते हो तो उसे माबूद की तरफ निसबत कर देते हो कि यह उस ने किया है।

हम उनसे कहना चाहेंगे कि ब्रह्मांड के नियमों के स्रोत को समझने की अनिच्छा या अक्षमता को स्रोत के अस्तित्व को नकारने के बहाने के रूप में प्रयोग करना ही अनुभूति और तर्क में सबसे बड़ी दरार "खालीपन की नास्तिक्ता" है।

सृष्टिकर्ता पर ईमान अनिवार्यता के प्रमाण के अनुरूप है:

किसी ने सृष्टिकर्ता होने का दावा नहीं किया है उसके सिवा जिसके हाथ में तमाम आदेश एवं सृष्टि है।

उसी ने इस वास्तविकता (कि वही रचयिता है) से पर्दा उठाया जब उसने मानवता की ओर अपने रसूलों को भेजा। यह उसी तरह है कि जब किसी सार्वजनिक स्थान में कोई थैला पाया जाता है, और एक आदमी को छोड़कर कोई भी व्यक्ति उसपर दावा नहीं करता है कि यह उसका थैला है। दावा करने वाला व्यक्ति उस थैला की विशेषताएँ एवं उसके अंदर मौजूद सामानों के बारे में बताता है। तो वह थैला उसी व्यक्ति का होगा यहाँ तक कि उसके विरुद्ध कोई दूसरा दावेदार प्रकट हो। और यह बात इंसान के अपने बनाए हुए क़ानून के अनुसार है।

"आप कह दें: उन्हें पुकारो जिन्हें तुम (पूज्य) समझते हो अल्लाह के सिवा। वह नहीं अधिकार रखते हैं कण बराबर भी, न आकाशों में न धरती में, तथा नहीं है उनका उन दोनों में कोई भाग, और नहीं है उस अल्लाह का उनमें से कोई सहायक"।

सूरा सबा: 22

"यदि उन दोनों में अल्लाह के सिवा अन्य पूज्य होते, तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः

पवित्र है अल्लाह, अर्श (सिंहासन) का स्वामी, उन बातों से, जो वे बता रहे हैं"।

सूरा अल-अंबिया: 22

किसी सृष्टिकर्ता पर ईमान इरादा एवं उद्देश्य के तर्क के अनुरूप है:

"मैंने जिन्नों और इन्सानों को मात्र इसी लिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें।

मैं नहीं चाहता हूँ उनसे कोई जीविका और न चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें।

अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता, शक्तिशाली, बलवान् है"।[सूरा अल-ज़ारियात: 56-58]

एक तत्वज्ञ सृष्टिकर्ता पर ईमान संगति और व्यवस्था के प्रमाण के अनुरूप है:

"जिसने उत्पन्न किया सात आकाश, ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दरार"?

सूरा अल-मुल्क: 3

"निश्चय ही हमने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान के साथ"।[सूरा अल-क़मर: 49]

ब्रह्मांड में आपदाओं और रोगों का पाया जाना (संसार की बनावट में) पूर्णता के पाए जाने के विपरीत नहीं है। यदि हम ब्रह्मांड (की बनावट) में बिल्कुल भी पूर्णता नहीं पाते, तो हमें अपूर्ण चीजों का पता नहीं होता। डिजाइन में दोष का दावा करना चीजों की हिक्मत के बारे में जानकारी की कमी के सिवा कुछ नहीं है। ब्रह्मांड के रचनाकार के अस्तित्व पर ईमान रखने वाले का इस बात पर विश्वास है कि इस ब्रह्मांड में कोई भी चीज़ बिना उद्देश्य के नहीं पाई जाती है। इस प्रकार, दुनिया का जीवन हमेशा के सफर की शुरुआत है, जिसको इंसान मौत के बाद पुनरूत्थान से दोबारा शुरू करेगा जिस के बाद हिसाब-किताब फिर प्रतिफल सामने आएगा। इस दुनिया में हमारा अस्तित्व एक महान उद्देश्य और मक़सद के लिए है। और वह है महान अल्लाह की जानकारी, उसकी इबादत, दुआ, प्रार्थना

के द्वारा सीधे उसकी ओर केंद्रित होना, संकट के समय धैर्य रखना एवं समृद्धि में उसका शुक्र अदा करना।

इस ब्रह्मांड के उपयोग को मानव के लिए संभव करना अल्लाह की हिक्मत एवं क्षमता में से है:

"तथा उसने चौपायों को पैदा किया, जिन में तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान है, और दूसरे लाभ हैं, उन में से कुछ को तुम खाते हो। इसी प्रकार उन में तुम्हारे लिए शोभा का सामान है, जब तुम शाम को चराकर लाते हो और जब सुबह चराने जाते हो।

और वे तुम्हारे बोझ, उन शहरों तक लादकर ले जाते हैं, जिन तक तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच सकते। वास्तव में, तुम्हारा रब अति करुणामय, दयावान् है।

तथा घोड़ा, खच्चर और गधा पैदा किया, ताकि उनपर सवारी करो और (वे) शोभा (बनें) और (अल्लाह) ऐसी चीज़ों की उत्पत्ति करता है, जिन्हें तुम नहीं जानते हो"।

सूरा अल-नह्ल: 5-8

पृथ्वी का इंसान के पलने बढ़ने के लिए अनुकूल होना अल्लाह की कृपा एवं दया में से है:

“अल्लाह वह है जिस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया और आसमान से पानी बरसाकर , उसके माध्यम से तुम्हारे आहार के लिए फल निकाले हैं । और नावों को तुम्हारे वश में कर दिया है कि वे समुद्र में उसके हुक्म से चलें फिरें , और उसी ने नदियाँ तुम्हारे वश में कर दी हैं"।

सूरा इब्राहीम: 32

सृष्टियों के लिए सर्वश्रेष्ठ शक्ल को चुनना अल्लाह की दया एवं हिक्मत में से है।

"फिर तुमने उस पानी के बारे में विचार किया, जिसे तुम पीते हो?

क्या तुमने उसे बरसाया है बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।?

यदि हम चाहें, तो उसे खारा कर दें, फिर तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते"?

सूरा अल-वाक़िया: 68

"क्या आपने अपने रब को नहीं देखा कि वह किस प्रकार छाया को फैलाता है, यदि वह चाहता, तो उसे स्थिर बना देता, फिर हमने सूर्य को उस छाया की निशानी बना दी"।

सूरा अल-फ़ुरक़ान: 45

सृष्टियों में पति-पत्नी का होना सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और विकासवाद के ग़लत होने का प्रमाण है:

"पवित्र है वह, जिसने पैदा किये प्रत्येक जोड़े, उसके जिसे उगाती है धरती तथा स्वयं उनकी अपनी जाति के और उसके, जिसे तुम नहीं जानते हो"।

सूरा यासीन: 36

एकल-कोशिका वाले जीवों में स्व-निर्माण पाया जाना संभव है, लेकिन प्रथम कोशिका की

उपस्थिति को यदि मान लिया जाए, तो फिर प्रजनन की विधि की बात आती है और अगर हम इस तर्क को भी मान लें कि सृष्टि स्व-प्रजनन जीव है जो विकसित हो सकता है, तो यह जोड़े पर लागू नहीं होगा। इस लिए कि ज़िन्दा जीव का मिलन एवं उसे एक दूसरे के लिए पैदा करने के लिए आवश्यक है कि उस रूप की पूर्ण सटीक जानकारी हो जिस में यह जोड़े विकसित होना चाहते हैं, जैसा कि उपकरणों की संरचना, उनके कार्यों और स्थानों और कई विवरणों में अंतर की जानकारी।

सृष्टिकर्ता पर ईमान कार्य-कारण कानून के अनुरूप है:

"क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं?

या उन्होंने ही पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? वास्तव में, वे विश्वास ही नहीं रखते हैं।

क्या इनके पास आप के रब के ख़जाने (कोषाघर) हैं या इन खजानों के यह रक्षक हैं"।

सूरा अल-तूर: 35

यह परिकल्पना कि ब्रह्मांड का कोई निर्माता नहीं है, कई प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध है जो हम अपने आस-पास देखते हैं। एक साधारण सा उदाहरण, जैसा कि हम कहें कि मिस्र के पिरामिड ऐसे ही अस्तित्व में आ गए हैं, इस संभावना (कि कोई निर्माता नहीं) का खंडन करने के लिए पर्याप्त है।

स्व-निर्माण एक तार्किक और व्यावहारिक असंभवता है, स्व-निर्माण का अर्थ यह है कि एक चीज़ एक ही समय में मौजूद भी थी और नहीं भी। और मनुष्य ने खुद ही अपने आपको पैदा कर लिया कहने का अर्थ यह है कि वह अस्तित्व में आने से पहले भी अस्तित्व में था जो कि असंभव है।

ब्रह्मांड के विनाश की वास्तविकता ऊष्मप्रवैगिकी (Thermodynamics) के दूसरे नियम के अनुरूप है, जो पृथ्वी में मौजूद हर चीज़ के सर्वनाश की बात करता है।

"प्रत्येक, जो धरती पर हैं, नाशवान हैं"।

सूरा अल-रहमान: 26

यह नियम कहता है कि ब्रह्मांड अब ऊष्मा मृत्यु की ओर बढ़ रहा है जब सभी पिंडों का तापमान समान हो जाएगा। ब्रह्मांड, जैसा कि वैज्ञानिक कहते हैं, विस्तार और विच्छेद की ओर बढ़ रहा है और फिर ब्रह्मांड और उसमें जो शामिल है सब का विनाश होगा। जबकि नास्तिकता का कहना है कि ब्रह्मांड जटिलता और विकास की ओर बढ़ रहा है, इसलिए वैज्ञानिकों का मानना है कि यह नियम डार्विन के सिद्धांत को ध्वस्त कर देता है।

सृष्टिकर्ता पर ईमान बार्कले सिद्धांत के मुताबिक है, जो ऐसे विवेक के अस्तित्व को आवश्यक ठहराता है जो चीज़ों से अवगत हो।

"क्या यह बात पर्याप्त नहीं है कि तेरा रब हर चीज़ से अवगत है"।

सूरा फ़ुस़्सिलत: 53

यह सिद्धांत कहता है कि हम मानव को बाहरी दुनिया के संबंध में ज्ञानेंद्रियों से मालूम कुछ बातों के सिवा कोई जानकारी नहीं । जबकि अक्ल ऐसी समग्र

अक्ल के अस्तित्व की आवश्यकता की बात करती है जो सभी चीजों को घेरे हुए हो एवं उन पर गवाह भी हो (यानी एक बाहरी शक्ति का अस्तित्व जो मानव से भिन्न हो)।

सृष्टिकर्ता पर ईमान मानव अधिकार की रक्षा करता है:

"ऐ मनुष्यो! हमने तुम्हें पैदा किया एक नर तथा एक नारी से, तथा बना दी हैं तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ, ताकि एक- दूसरे को पहचानो। वास्तव में, तुम में अल्लाह के समीप सबसे अधिक आदरणीय वही है, जो तुम में अल्लाह से सबसे अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला है, सबसे सूचित है"।

सूरा अल-हुजुरात: 13

सृष्टिकर्ता पर ईमान जीवन के काल्पनिक और एक इलेक्ट्रॉनिक खेल होने को नकारता है:

"हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, उन्हें खेल के रूप में नहीं बनाया है।

यदि हम कोई खेल बनाना चाहते, तो उसे अपने पास ही से बना लेते, यदि हमें ये करना होता।

बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य को, तो वह उसका सिर कुचल देता है, और वह अकस्मात समाप्त हो जाता है, और तुम्हारे लिए विनाश है, उन बातों के कारण, जो तुम बनाते हो।

"और उसी का है, जो आकाशों तथा धरती में है और जो फ़रिश्ते उसके पास हैं, वे उसकी इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते हैं, और न थकते हैं।

वे रात और दिन उसकी पवित्रता का गान करते हैं तथा आलस्य नहीं करते"।

सूरा अल-अंबिया: 16-20

यह कहना कि मानव जीवन एक इलेक्ट्रॉनिक गेम है जो वास्तविकता का अनुकरण करता है, एक तार्किक असंभवता है। क्योंकि अंकगणितीय संचालन करने वाले कंप्यूटर को (हमारे पर्यावरण) द्वारा निर्मित नकली वातावरण जिसमें हम जीते हैं, उसे उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त संरचनात्मक क्षमताओं की आवश्यकता

होती है ताकि वह वास्तविकता का अनुकरण कर सके। लेकिन यह पता चला है कि केवल कुछ सौ इलेक्ट्रानस के व्यवहारों को अनुकरण करने के लिए आवश्यक सूचनाओं को संचित करने के लिए ब्रह्मांड में मौजूद सारी चीज़ों से भी अधिक परमाणुओं की आवश्यकता होती है। इस लिए हम किसी भी उन्नत तकनीक के साथ क्वांटम भौतिकी और इसके जटिल सिद्धांतों का न तो गठन कर सकते हैं और न ही इनका अनुकरण कर सकते हैं, यहां तक कि सबसे बड़े कंप्यूटर पर भी नहीं जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं।

मानव विवेक एक कंप्यूटर नहीं है, और इसकी विशिष्टता इसकी अनुभूति में है।

"तो क्या वे लोग धरती पर चलते फिरते नहीं हैं? ताकि उनके ऐसे दिल होते, जिनसे वह समझते, अथवा ऐसे कान होते, जिनसे वह सुनते, वास्तव में, आँखें अन्धी नहीं होती हैं, परन्तु वो दिल अन्धे हो जाते हैं, जो सीनों में हैं"।

सूरा अल-हज्जः 46

"वही है, जिसने बनाये हैं तुम्हारे लिए कान तथा आँखें और दिल, (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो"।

सूरा अल-मोमिनून: 78

मानव विवेक कोई कंप्यूटर नहीं है जो अपने घटकों की विफलता के कारण काम करना बंद कर देता है।

वे लोग दुनिया के जीवन के ज़ाहिर को तो जानते हैं, परन्तु प्रलोक से अचेत हैं"।

सूरा अल-रूम: 7

प्रसिद्ध नास्तिक स्टीफन हॉकिन्स ने पुनरुत्थान के दिन को नकारने के बहाने के रूप में कहा है कि जीवन का अंत विवेक के नष्ट होने से जुड़ा हुआ है, एक कंप्यूटर की तरह जो उसके घटकों के विफल होने पर काम करना बंद कर देता है।

हम उनसे कहेंगे: क्या स्वस्थ विवेक (दिमाग) एक मृत शरीर के दिल को इस योग्य बना सकता है कि

वह धड़क सके और फेफड़े को कि वह सांस ले सके? बिलकूल नहीं। यह मृतक को मृतक के शरीर में फिट किया गया है, जिसका कोई मूल्य नहीं है, उस आत्मा के बिना जो उस से निकल गई है। इसलिए हम एक ऐसे शरीर को तलाश करते हैं जिसमें आत्मा हो, एक दिल हो जो धड़कता हो और एक फेफड़ा हो जो सांस लेता हो। यद्यपि नास्तिक आत्मा को न माने, जिसके अस्तित्व या उसके सृष्टिकर्ता के एहसान को स्वीकार किए बग़ैर, उसकी निशानी की तलाश में है, यह पर्याप्त है कि ब्रेन या हेड ट्रांसफर के क्षेत्र में काम कर रहे वैज्ञानिकों के प्रयोग इस बात को स्वीकार करते हैं।

"क्या तुमने समझ रखा है कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे"?

सूरा अल-मोमिनून: 115

मानव दिमाग की तुलना कंप्यूटर से करना नास्तिकता के ख़िलाफ़ एक तर्क है:

कंप्यूटर को बहुत ही सीमित दिमाग वाले इंसान ने बनाया है, यह अचानक नहीं आया है। और इस कंप्यूटर को बनाने वाला इंसान, जो अधिक जटिल है, वह भी दुनिया में अचानक नहीं आया है। उसका कोई न कोई बनाने वाला है। जब नास्तिक के निकट कंप्यूटर को कोई दोबारा जीवित नहीं कर सकता, क्योंकि उसके बनाने वाले की क्षमताएँ बहुत सीमित हैं। यदि वह अपने आपकी पैदाइश पर या इस ब्रह्मांड के निर्माण पर, जो उसके आस पास है, या उसकी बनावट में जो सुन्दरता है, उस पर विचार करे, तो उसे पैदा करने वाले की शक्ति पर विश्वास हो जाएगा, या उसके विनाश के बाद उसे दोबारा लौटाने की क्षमता पर भी ईमान आ जाएगा।

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

"क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है, यदि वह चाहे, तो तुम्हारे स्थान पर किसी दूसरी सृष्टि को आबाद कर दे"।

सूरा इब्राहीम: 19

मानव दिमाग की तुलना कंप्यूटर से करना पुनरुत्थान की पुष्टि करता है:

जब एक कंप्यूटर निर्माता अरबों कंप्यूटरों को इस तरह से फिर से बना लेता है, जो उसके लिए पहली बार की तुलना में आसान हो, बल्कि पहली बार से भी बेहतर बना लेता है। और अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण हैं, तो भला जिस ने महान क्षमताओं के साथ मनुष्य या ब्रह्मांड को बनाया है वह कैसे इनसान को या इस ब्रह्मांड को दोबारा बनाने या पहली बार की तुलना में बेहतर बनाने में अयोग्य हो सकता है?

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

"तथा वही है, जो आरंभ करता है उत्पत्ति का, फिर वह उसे दुहरायेगा और वह अति सरल है उसपर और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में और वही प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है"।

अर- रूम- 27

इंसानी दिमाग को कंप्यूटर जैसा बताना वास्तविकता की जानकारी की ओर ले जाता है

अगर एक नास्तिक कंप्यूटर और इंसान के बीच बेहतर तुलना करे तो जान जाएगा कि कंप्यूटर, अपने भौतिक घटकों के साथ, उर्जा के बिना बेकार है। ऑपरेटिंग प्रोग्राम उसे उसके इर्द-गिर्द के वैज्ञानिक इनपुट से जोड़ता है। इसी प्रकार मनुष्य को उर्जा की आवश्यकता है, जो उसे सक्रिय रखे, उसमें जीवन डाले, उसे अपने आपको एवं अपने इर्द-गिर्द जो है, उसे जानने पर सक्षम बनाए और उसे पत्थर, पेड़ और अन्य जानवरों से एहसास और क्षमताओं में एक विशाल अंतर से अलग करे। जब उससे यह शक्ति ख़त्म हो जाती है, तो एहसास भी ख़त्म हो जाता है। इसी को हम गर्भावस्था के पहले महीनों में, अपनी मां के गर्भ में मौजूद भ्रूण में देखते हैं, जब यह मांस का एक टुकड़ा होता है, जिसमें कोई एहसास नहीं होता है। और इसी को हम मनुष्य की मृत्यू के बाद देखते हैं, जब वह मांस का एक टुकड़ा बन जाता है, जिसमें कोई एहसास नहीं होता है। इन दोनों हालतों के बीच देखते हैं कि वह ज़िन्दगी और एहसास से भरा होता है। अक्ल यह कहती है कि ज़िन्दा व्यक्ति मृतक से किसी ऐसी चीज़ में ज़्यादा होता है, जो उसे ज़िन्दगी और एहसास प्रदान करती है।

जैसे कंप्यूटर जो काम करता है वह चलाने वाली शक्ति में उस कंप्यूटर से अधिक होता है जो काम नहीं करता है। इस चीज़ को नास्तिक एहसास कहता है औ अल्लाह इसी को आत्मा का नाम देता है।

(हे नबी!) "लोग आपसे रूह़ के विषय में पूछते हैं, आप कह दें: रूह़ मेरे रब के आदेश से है, और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया, वह बहुत थोड़ा है"।

सूरा अल-इसरा: 85

सर्व शक्ति के विरोधाभासी (omnipotence paradox) का खंडन:

वे लोग कहते हैं: क्या सृष्टिकर्ता एक बड़ी चट्टान पैदा कर सकता है, जिसे वह उठा न सके?

अल्लाह उत्तर देता है:

"और आपका पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे तथा निर्वाचित करता है। उन को कोई इखतियार नहीं, पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उनके साझी बनाने से"।

सूरा अल-क़सस: 68

"ऐ लोगो! एक उदाहरण (मिसाल) दिया जा रहा है, ज़रा ध्यान से सुनो। अल्लाह के सिवाय तुम जिन-जिन को पुकारते रहे हो, वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते, अगर सारे के सारे जमा हो जाएँ तो भी। बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ ले भागे, तो वे उसे भी उससे छीन नहीं सकते। बड़ा कमज़ोर है माँगने वाला और बहुत कमज़ोर है वह, जिससे माँगा जा रहा है।

उन्होंने अल्लाह का वैसे आदर नहीं किया, जैसे उसका आदर करना चाहिए! निःसंदेह अल्लाह अत्यंत शक्तिशाली, सब पर प्रभुत्वशाली है"।

सूरा अल-हज्ज: 73,74

"तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान नहीं किया, जैसे उसका सम्मान करना चाहिए था और धरती पूरी उसकी एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन, तथा आकाश लपेटे हुए होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं"।

सूरा अल-ज़ुमर: 67

अतः नास्तिक सृष्टिकर्ता के खुद से बड़ी चट्टान बनाने की संभावना के बारे में जो प्रश्न दोहराता है, वह फ़ुज़ुल है, वैसे ही जैसे एक त्रिभुजाकार वृत्त खींचने की संभावना के बारे में प्रश्न किया जाए। सृष्टिकर्ता जो पूज्य है, अकेला है, एक है, उसकी शान बुलंद है, वह ऐसा कुछ नहीं करता है जो उसके योग्य न हो, अल्लाह इस तरह की बातों से बहुत ऊँचा है।

अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण है: कोई भी पादरी या उच्च धार्मिक पद का व्यक्ति नग्न होकर सार्वजनिक सड़क पर नहीं निकलता है, हालांकि वह ऐसा कर सकता है, लेकिन वह इस सूरत में जनता के सामने नहीं आ सकता, क्योंकि यह व्यवहार उसकी धार्मिक स्थिति के लिए उचित नहीं है।

बहुविविध कायनात की परिकल्पना एक सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को अनिवार्य करती है:

दूसरे ब्रह्मांडों के अस्तित्व के बारे में वह परिकल्पना, जो नास्तिक लोग सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को नकारने के बहाने के रूप में करते हैं, यह वास्तव में

उन्हीं के विरूद्ध तर्क है। यदि इस कल्पना को मान भी लें तो इन ब्रह्मांडों के एक सृष्टिकर्ता का होना आवश्यक है।

“जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है, क्या वह इन जैसों के पैदा करने पर कादिर नहीं है? यकीनन है, और वही पैदा करने वाला, जानने वाला है।

उसकी शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है, तो कह देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है।

तो पवित्र है वह, जिसके हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे”।

सूरा यासीन: 81-83

ओकाम का सिद्धांत, जो सरलतम स्पष्टीकरण के अधिक सही होने की बात करता है, ईमान के अनुरूप है।

"आप बेलाग होकर इस्लाम धर्म पर डटे रहिए, यही अल्लाह तआला की वह प्रकृति है जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह की सृष्टि को बदलना

नहीं है। यही सीधा धर्म-मार्ग है, किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते हैं"।

सूरा अल-रूम: 30

धर्म के लोगों के बीच यह कहना पर्याप्त है कि सृष्टिकर्ता एक है, तो वे एक आवाज़ में उत्तर देंगे: हाँ, सृष्टिकर्ता एक है, परन्तु वे एक मुद्दे पर विवाद करेंगे, और हो सकता है कि एक दूसरे को क़त्ल भी करने लगें, और वह है वह शक्ल जिसमें सृष्टिकर्ता ज़ाहिर होता है, उनमें से कुछ लोग कहते हैं: सृष्टिकर्ता एक है लेकिन वह तीन व्यक्तियों में सन्निहित होता है, या उसका लड़का है। जबकि कुछ लोग कहते हैं कि सृष्टिकर्ता जानवर या बुत की शक्ल में आता है। अल्लाह इन तमाम चीज़ों से पाक एवं बहुत ऊँचा है।

उदाहरण के तौर पर भारत में ब्रिटिश सरकार को सौंपी गई रिपोर्ट में कहा गया है:

"समिति द्वारा शोध से प्राप्त सामान्य निष्कर्ष यह है कि अधिकांश भारतीय एक उच्चतम अस्तित्व में दृढ़ विश्वास करते हैं"।[2]

पास्कल की शर्त और एक निर्माता के अस्तित्व में विश्वास:

कुछ नास्तिकों द्वारा उठाए गए बिंदुओं में से एक यह है कि यदि उनपर एक पूज्य पर ईमान, एक धर्म एवं उस धर्म की पवित्र पुस्तक का अनुपालन करना अनिवार्य है। तो वह पूज्य, धर्म एवं पुस्तक कौन हों जिनपर ईमान लाना वाजिब है?

"तुम्हारा पूज्य बस एक है, फिर जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते, उनके दिल निवर्ती (विरोधी) हैं और वे अभिमानी हैं।

निश्चय ही अल्लाह जानता है, जो वे छिपाते हैं तथा जो प्रकट करते हैं। निःसंदेह वह अभिमानियों से प्रेम नहीं करता"।

---

[2] "मौसूअतु क़िस्सतिल-हज़ाराह" वल देवरांत, खंड: ३, पृष्ठ: २०९।

सूरा अन नहल: 23

सृष्टिकर्ता में विश्वास पूर्ण निश्चितता के साथ होना चाहिए न कि संभावनाओं पर आधारित होना चाहिए। वह ब्रह्मांड एवं उसमें जो कुछ है, उनका निर्माता है, अकेला है, उसके संप्रभुता में उसका कोई साझीदार नहीं है, उसका कोई बच्चा नहीं है। वह किसी बुत, मनुष्य या जानवर की शक्ल में प्रकट नहीं होता है। वह ऐसा सृष्टिकर्ता है जिसकी ओर सभी मानव संकट के समय चाहे अनचाहे, जानबूझकर या अनजाने में लौटते हैं।

"और तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है। उस अत्यंत दयालु, दयावान के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं"।

सूरा अल-बक़रा-136

प्रसिद्ध पास्कल शर्त के सिद्धांत के प्रवर्तक अपने अनुयायियों से सभी परिस्थितियों में एक अल्लाह पर ईमान लाने का आग्रह करते हैं:

पास्कल की शर्त में कहा गया है:

यदि आप अल्लाह पर ईमान लाते हैं और अल्लाह का अस्तित्व है, तो आपको प्रतिफल के रूप में अनंत काल के लिए स्वर्ग मिलेगा, और यह असीमित लाभ है।

यदि आप अल्लाह पर ईमान नहीं लाते हैं और अल्लाह का अस्तित्व है, तो आपको प्रतिफल के रूप में अनंत काल के लिए नरक मिलेगा, और यह असीमित नुक़सान है।

यदि आप अल्लाह पर ईमान लाते हैं और अल्लाह का अस्तित्व नहीं है, तो आपको प्रतिफल के रूप में कुछ नहीं मिलेगा, और यह सीमित क्षति है।

यदि आप अल्लाह पर ईमान नहीं लाते हैं और अल्लाह का अस्तित्व नहीं है, तो आपका हिसाब किताब नहीं होगा, परन्तु इस प्रकार आप अपना जीवन जी लेंगे, और यह सीमित लाभ है।

तो नास्तिक कहता है: यदि हम इस सिद्धांत को लागू करना चाहें, तो हम पर किस माबूद की इबादत अनिवार्य है: ईसाइयों के देवता क्राइस्ट, या हिंदुओं के

भगवान कृष्ण, बौद्धों के देवता या गौतम बुद्ध, या मुसलमानों के अल्लाह की इबादत?

हम उससे कहेंगे: तुम को चाहिए कि उसपर ईमान लाओ एवं उसकी इबादत करो जिसको सभी संकट के समय पुकारते हैं। वह बुद्धा, कृष्ण, क्राइस्ट एवं सभी मानव का पैदा करने वाला है। उसी ने तुम्हें पैदा किया है और मौत देता है। जिसके पास कुछ न हो, वह कुछ नहीं देता है। क्या मांगने (ज़रूरत के समय पुकारने) में राजा और आम लोगों के बीच बराबरी करना उचित है?

"आप कह दें: हे लोगो! यदि तुम, मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो, तो (सुन लो) मैं उसकी इबादत (वंदना) कभी नहीं करूँगा, जिसकी इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा तुम करते हो। परन्तु, मैं उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करता हूँ, जो तुम्हें मौत देता है और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ"।

सूरा यूनुस: 104

नास्तिक मोमिन है, चाहे वह स्वीकार करे या इंकार करे, परन्तु वह अत्याचार तथा अहंकार के कारण कुफ्र का एलान करता है एवं ईमान को छुपाता है।

"तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें (यानी निशानियों को), अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जबकि उनके दिलों ने उनका विश्वास कर लिया, तो देखो कि कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम"?

सूरा अन-नमल: 14

उदाहरण को तौर पर: जब एक विमान के यात्रियों को इसके अपरिहार्य दुर्घटना का एहसास होता है, तो नास्तिकों सहित वे अपने धर्मों और संप्रदायों में भिन्न होने के बावजूद, उस शक्ति को मदद के लिए पुकारते हैं जो बुलंदी में है। इस क्षण वे इस्लाम धर्म पे होते हैं। परन्तु जब उन्हें बच जाने का विश्वास हो जाता है, तो वे मध्यस्थों (बातिल माबूदों) की ओर लौट आते हैं ताकि फिर से अलग अलग हो जाएं।

"और जब वे नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिए धर्म को शुध्द करके उसे पुकारते हैं।

फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं"।

सूरा अल-अंकबूत: 65

कुरआन इसकी पुष्टि करता है कि ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता पर ईमान नहीं लाने की घोषणा करना हठ और अहंकार के अलावा और कुछ नहीं है।

"वास्तव में, जो अल्लाह की आयतों में, बिना किसी प्रमाण के झगड़ते हैं, जो उनके पास आया है, यह केवल उनके दिलों में अहंकार के कारण है, (यह वह सम्मान है) जिस तक वे पहुचने वाले नहीं हैं। अतः, आप (हर बुराई से) अल्लाह की शरण लें। वास्तव में, वही सब कुछ सुनने एवं जानने वाला है"।

सूरा ग़ाफ़िर: 56

जिस तरह सब के सब ने विपत्ति में सीधे अल्लाह की ओर रुख़ किया, उसी प्रकार उनपर अनिवार्य था कि वे सुख तथा दुख में सीधे उसी की ओर लौटें। यही वह माबूद है जिसकी इबादत की ओर इस्लाम धर्म बुलाता है, उसके अंतिम रसूल मुहम्मद -

उनपर अल्लाह की दया एवं शांति अवतरित हो- एवं उसकी पवित्र पुस्तक क़ुरआन करीम पर ईमान लाने का आह्वान करता है।

(ऐ मुसलमानो!) "तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाए तथा उस (क़ुरआन) पर जो हमारी ओर उतारा गया, और उसपर जो इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब तथा उनकी संतानों की ओर उतारा गया, और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया, तथा जो दूसरे नबियों को उनके रब की ओर से दिया गया। हम इनमें से किसी के बीच अंतर नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं"।

सूरा अल-बक़रा-136

इसी तरह अल्लाह ने विभिन्न समुदायों की ओर कई नबियों एवं रसूलों को भेजा है, उनके नाम क़ुरआन में उल्लेख हुए हैं जैसे क्राइस्ट, मूसा, इब्राहीम, नूह, दाऊद, सुलैमान, इस्माईल, इसहाक, युसूफ, आदि। और इनके अलावा भी बहुत सारे नबी हैं जिनका ज़िक्र नहीं हुआ है। अतः यह असंभव नहीं कि मानव निर्मित धर्मों में मौजूद कुछ पवित्र धार्मिक प्रतीक वास्तव में

नबी हों, जिनकी ज़माना गुज़रने के साथ साथ उनकी क़ौमें अल्लाह के अतिरिक्त इबादत करने लगीं एवं उनको पवित्र समझने लगीं, जिस प्रकार अल्लाह के नबी नूह की क़ौम ने किया, जब वह उनमें से नेक लोगों की इबादत करने लगी एवं उनको पवित्र समझने लगी।

और आप से पहले के बहुत से रसूलों की घटनाओं को हम ने आप से बयान किया है, और बहुत से रसूलों की नहीं भी की हैं"।

सूरा अल-निसा: 164

अली इज्ज़त बेगोविच कहते हैं:

अरस्तू ने तीन वैज्ञानिक पुस्तकें लिखीं, ऑन फिजिक्स, ऑन द हेवन्स और ऑन अर्थ, इन तीनों पुस्तकों में आज एक भी वैज्ञानिक रूप से सही वाक्य नहीं है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह तीनों पुस्तकें दस में से शून्य के समान हैं। जबकि क़ुरआन, जिस तरह कि मौरिस बुकाये ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "द क़ुरआन, बाइबिल एंड द टोरा फ्रॉम द पर्सपेक्टिव ऑफ मॉडर्न साइंस" में कहा है: "सच तो यह है कि मुझे पवित्र

क़ुरआन की एक भी आयत नहीं मिली जो किसी एक वैज्ञानिक तथ्य के ख़िलाफ़ हो। बल्कि, क़ुरआन कई विषयों में आधुनिक विज्ञान से आगे रहा है और उसने अपने समय में प्रचलित कई वैज्ञानिक सिद्धांतों को ठीक किया। उदाहरण के लिए, यह विचार कि भूजल का निर्माण महाद्वीपों के तल में गहरी खाई से हुआ है, जिस ने भूजल को महासागरों से पृथ्वी की गहराई तक पहुँचाई है। क्या उस युग में प्रचलित इस वैज्ञानिक मिथक की क़ुरआन ने पुष्टि की है? या उसने कहा है:

"क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से जल उतारा, फिर उसे स्रोतों के रूप में धरती में प्रवाहित कर दिया"।

सूरा अल-जुमर: 21

अतः भूजल का स्रोत वर्षा से बनने वाले झरने हैं, न कि अरस्तू की गहरी-महाद्वीप की खाई, जो उस समय माना जाता था"।

ग़ौर व फ़िक्र के चंद पहलू;

यदि हम कहें कि हर चीज़ का एक स्रोत है, और उस स्रोत का एक स्रोत है। और यदि यह क्रम लगातार जारी रहे, तो यह तर्कसंगत है कि हम शुरुआत या अंत तक पहुंच जाएंगे। हमें उस स्रोत तक पहुंचना है जिसका कोई स्रोत न हो। इसी को हम "बुनियादी कारण" के नाम से जानते हैं जो कि बुनियादी घटना से भिन्न होता है। उदाहरण के तौर पर, जब हम यह मान लें कि महाविस्फोट बुनियादी घटना है, तो यह मानना होगा कि सृष्टिकर्ता इस घटना का मुख्य कारण है (हर कारण को कारण बनाने वाला है), जिसने इस घटना को कारण बनाया।

यह कहना कि ब्रह्मांड के निर्माता को एक निर्माता की आवश्यकता है, बावजूद इसके कि वह निर्माता है, यह उसी तरह है जैसे हम कहें: नमक को नमक की आवश्यकता है, ताकि वह नमकीन हो सके, बावजूद इसके कि वह नमकीन है। यह प्रश्न कि "अल्लाह को किसने पैदा किया?" इस प्रश्न के जैसा है: कि जब कुछ न था तो क्या था?, इस प्रश्न के बराबर है

कि जिसकी कोई शुरूआत नहीं है, उसकी शुरूआत क्या है?, इस प्रश्न की तरह है: "पीले रंग की गंध क्या है?" तो जैसे पीला रंग गंध वाली चीजों की सूची में नहीं आता है -अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण है- रचयिता सृजित वस्तुओं की सूची में नहीं आता है।

ब्रह्मांड का एक निर्माता है और वह एक है।और "सृष्टिकर्ता को किसने सृष्टि किया" यह प्रश्न सही नही है। उदाहरण स्वरूप सिपाही और गोली के प्रसिद्ध उदाहरण को लेते हैं। सिपाही गोली मारना चाहता है, परन्तु वह उस समय तक गोली नहीं मार सकता है जबतक कि वह अपने पीछे वाले सिपाही से अनुमति न ले ले, और यह सिपाही उस समय तक अनुमति नहीं दे सकता है जबतक कि वह अपने पीछे वाले सिपाही से अनुमति न प्राप्त कर ले। इस प्रकार इस क्रम का कोई अंत नहीं होगा। प्रश्न यह है कि क्या इस प्रकार सिपाही गोली मार सकता है? उत्तर है: नहीं, इस लिए कि इस प्रकार मामला उस सिपाही तक नहीं पहुँचेगा जो गोली चलाने की अनुमति दे। मगर जब सिलसिले का उस व्यक्ति पर अंत हो जाए जिसके उपर और कोई न हो जो गोली

चलाने की अनुमति दे तो गोली चल जाएगी। चाहे व्यक्तियों की संख्या जो भी हो, उस व्यक्ति के बिना गोली कभी नहीं चलेगी। जैसे वे सभी व्यक्ति शून्यों की तरह हैं, जिनको एक दूसरे के बगल में रख देने से कोई लाभ नहीं मिलेगा, चाहे उनकी संख्या जितनी हो जाए और न उन का कोई मोल होगा यहाँ तक कि उनसे पहले एक या उससे अधिक की कोई संख्या लिखा जाए।

उदाहरण के लिए, टेलीविज़न या रेफ़्रिजरेटर जैसे किसी वस्तु या माल के निर्माता को लें, यह डिवाइस के उपयोग के लिए क़ानून और नियम स्थापित करता है, और इन निर्देशों को एक किताब में लिखता है, जो उपकरण के प्रयोग के नियम की व्यख्या करती है। फिर वह कम्पनी उस किताब को उपकरण के साथ रख देती है। यदि उपभोक्ता आवश्यकतानुसार डिवाइस का लाभ उठाना चाहता है तो उसे इन निर्देशों का पालन करना चाहिए। जबकि निर्माता इन क़ानूनों का पालन नहीं करता है। अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण हैं। इसी तरह अल्लाह ने ही कार्य-कारण का नियम बनाया है, वह इस क़ानून के अधीन नहीं है जिसे उसने स्वयं

बनाया है, क्योंकि उसके पास असीम क्षमता है और वह जो चाहता है करता है।

यदि कोई व्यक्ति अपने कमरे में प्रवेश करे और देखे कि खिड़की का शीशा टूटा हुआ है और अपने परिवार से पूछे कि खिड़की का शीशा किसने तोड़ा? और उसका परिवार जवाब दे कि अचानक टूट गया। तो यह जवाब ग़लत है। इस लिए कि उसने यह नहीं पूछा है कि खिड़की कैसे टूटी, बल्कि उसने पूछा है कि खिड़की किसने तोड़ी।क्योंकि अचानक क्रिया की विशेषता है न कि कर्ता। इसी प्रकार यदि कोई प्रश्न करे कि ब्रह्मांड को किसने बनाया, तो उसका उत्तर अचानक कहकर देना सही नहीं होगा। और अगर हम मान लें कि कोई अपने कमरे में प्रवेश करता है और खिड़की का शीशा टूटा हुआ पाता है, और अपने परिवार से पूछता है कि इसे किसने तोड़ा? और वे जवाब देते हैं कि अमुक ने उसे अचानक तोड़ दिया, तो यह उत्तर सही और स्वीकार्य होगा। क्योंकि कांच का टूटना यादृच्छिक है, यह अचानक हो सकता है। लेकिन अगर वही व्यक्ति अगले दिन अपने कमरे में प्रवेश करे और पाए कि खिड़की के

शीशे की मरम्मत की गई है और जैसा था वैसा ही हो गया है। फिर वह अपने परिवार से पूछे कि किसने इसकी मरम्मत की, और वे उत्तर दें कि अमुक ने उसे अचानक से ठीक कर दिया। तो यह उत्तर अस्वीकार्य है बल्कि तार्किक रूप से असंभव है। क्योंकि यह क्रिया (शीशे की मरम्मती) कोई यादृच्छिक क्रिया नहीं है। इस लिए हम कहेंगे कि यह बात तार्किक रूप से असंभव है कि ब्रह्मांड या सृष्टियों की पैदाइश अचानक से हो गई है, बल्कि उन्हें इच्छा के साथ पैदा किया गया है। इस प्रकार ब्रह्मांड को पैदा करने के मामले में अचानक जैसी कोई बात नहीं रह जाती।

डॉ. रॉबर्ट व्हाइट, 1960 के बाद से मस्तिष्क या सिर प्रत्यारोपण के क्षेत्र में सबसे बड़े डाक्टरों में से एक माने जाते हैं। एक अनोखे प्रयोग में, वह इस बात पर सक्षम हुए कि एक बंदर के मस्तिष्क को निकाल कर उसे शरीर से बाहर ज़िन्दा रखें, इस के लिए उन्हों ने उसे ठंडा रखते हुए कुछ विशेष मशीनों का उपयोग किया जो कृत्रिम हृदय की तरह उसे रक्त पहुंचाने का काम करती हैं। इस प्रकार, मस्तिष्क को स्वस्थ अवस्था में रखा जा

सकता है और दूसरे व्यक्ति के शरीर में स्थानांतरण के लिए तैयार किया जा सकता है। यह प्रयोग नास्तिक का खंडन करता है जो कहता है कि जीवन दिमाग के नष्ट हो जाने से ख़त्म हो जाता है। क्योंकि यह बंदर मर गया और मस्तिष्क बिना नष्ट हुए स्वस्थ रहा। तो क्या धरती के सभी वैज्ञानिक इस स्वस्थ मस्तिष्क को उस बंदर के शरीर में लौटा सकते हैं जो मर गया ताकि वह दोबारा जीवित हो उठे? स्पष्ट रूप से यह असंभव है।

यह ज्ञात है कि कंप्यूटर का वैज्ञानिक इनपुट को समझना मानव द्वारा की गई पूर्व प्रोग्रामिंग पर निर्भर है। तो क्या कोई व्यक्ति पूर्व प्रोग्रामिंग के बिना अपने इर्द-गिर्द की चीज़ों को जान सकता है? पांचों इंद्रियां जो हमें संचारित करती हैं, वह विद्युत संकेतों के अलावा और कुछ नहीं है, जो इंद्रियों से दिमाग तक तंत्रिकाओं के माध्यम से प्रेषित होती हैं फिर दिमाग में उनकी पहचान होती है। इस ब्रह्मांड में हम जो कुछ भी महसूस करते हैं, वह मस्तिष्क के अंदर विद्युत संकेतों के अलावा और कुछ नहीं हैं। तो आख़िर किस चीज़ ने मस्तिष्क को हर उस चीज़ को पहचानने और उनके बीच इतने सटीक

रूप से अंतर करने में सक्षम बनाया जो इंद्रियां अनुभव करती हैं? कि यह बड़ा है, यह छोटा है, यह पीला है, यह हरा है, यह अच्छी आवाज़ है और यह बुरी आवाज़ है। हमारे अंदर कौन सी मशीन काम करती है ताकि संवेदनाओं को उनके सभी अंतरों के साथ जान जाए। केवल पैदा होने के बाद नहीं बल्कि पैदा होने से पहले भी। भ्रूण अपनी माँ के गर्भ में, आत्मा डाले जाने के बाद, खुद को महसूस करता है, हंसता है, अपने मुंह में अपनी उंगली डालता है, अपने अंगों को हिलाता है, जैसा कि वह दूसरों को महसूस करता है, इसलिए वह ध्वनियों को सुन और प्रतिक्रिया कर सकता है और मां के आनंद और दुख के बीच अंतर कर सकता है। तो यह सब कुछ उसे किस ने सिखाया और इस की प्रोग्रामिंग किस ने की?

प्रकृति ब्रह्मांड की निर्माता नहीं हो सकती, प्रकृति समय, स्थान और ऊर्जा से बनती है। अतः इसे उसकी आवश्यकता है जिसने इन कारकों की उत्पत्ति की है। और जिसने इन्हें इस अत्यधिक जटिलता और इसके घटकों और विभिन्न प्रकृतियों और रंगों के बीच

महान अंतर के साथ बनाया है। फिर प्रकृति को यह कैसे मालूम हुआ कि मानव दिमाग को ब्रह्मांड के इतने सारे विवरणों पर ध्यान देना चाहिए? तो उसने उसे महसूस करने एवं जानने की एक मशीन प्रदान की, जो चीजों के बीच अंतर करती है, जबकि यह मशीन इंद्रियों से मस्तिष्क तक प्रसारित विद्युत संकेतों से ज्यादा कुछ नहीं है। दुनिया की जटिलता एवं एहसास की जटिलता के बीच लिंक यह दर्शाता है कि यह अचानक होने वाली चीज़ नहीं है बल्कि यह सटीक गणना के साथ क्रमादेशित है। यदि यह अचानक होता तो प्रकृति उसे हर चीज़ को महसूस करने में सक्षम बनाती और उससे कोई भी चीज़ न छूटती, या फिर प्रकृति उसे हर चीज़ के समझने तथा महसूस करने से वंचित कर देती। लेकिन चूँकि महसूस करने की मशीन की प्रोग्रामिंग की हुई है, इस लिए वह सीमित दायरे में काम करती है। इस तरह प्रत्येक जीव के लिए विशेष प्रोग्राम है जो उसे विशिष्ट चीजों को समझने में सक्षम बनाता है, जबकि अन्य चीजें को वह नहीं जान पाता।

बाबा आदम का सम्मान केवल इस लिए नहीं है कि वे पूर्णरूप से से मिट्टी से बनाये गये थे, बल्कि, उन्हें सीधे सारे संसारों के रब के हाथों से बनाया गया था, और अल्लाह ने अपने अनुपालन के तौर पर फ़रिश्तों से आदम को सजदा करने को कहा।

अल्लाह ने आदम की नसल को एक तुच्छ पानी से चलाया जो सृष्टि के स्रोत और सृष्टिकर्ता के एक होने का प्रमाण है। और यह कि उसने आदम को अन्य सभी सृष्टियों से अलग किया, उन्हें स्वतंत्र तौर पर पैदा किया उनके सम्मान के लिए, एवं सारे संसारों के रब की इस महान हिक्मत को हासिल करने के लिए कि उन्हें धरती पर खलीफ़ा बनाए। इसी प्रकार अल्लाह के सर्वशक्तिमान होने के प्रमाण के तौर उसने आदम को बिना माँ-बाप के पैदा किया, और इस के दूसरे उदाहरण के तौर पर ईसा -उनपर अल्लाह की शांति हो- को बिना बाप के पैदा किया, ताकि वह अल्लाह के सर्वशक्तिमान होने का चमत्कार साबित हों, तथा लोगों के लिए एक निशानी हों। यह जो नास्तिक लोग विकास के सिद्धांत

के कारण अल्लाह का इंकार करते हैं, यह उन्हीं के विरूद्ध तर्क है।

"वस्तुतः अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है, जैसे आदम की। उसे (अर्थात आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उससे कहाः "हो जा" तो वह हो गया"।[सूरा आल-ए-इमरान: 59]

जब कोई व्यक्ति अत्यधिक अमीर एवं उदार होता है, तो वह अपने दोस्तों एवं परिजनों को खाने-पीने के लिए आमंत्रित करता है। हमारा यह गुण, अल्लाह के पास जो है, उसका एक छोटा सा हिस्सा है। सृष्टिकर्ता अल्लाह के लिए ही ऐश्वर्य और सौन्दर्य के गुण हैं, वह बड़ा दयालू एवं अति कृपावान है, वह दाता एवं उदार है। उसने हमें अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, ताकि वह हम पर रहम करे, प्रसन्नता दे एवं हम पर कृपा करे, यदि हम निष्ठावान होकर उसकी इबादत करें, उसका अनुपालन करें एवं उसका आदेश मानें। मानव के सारे अच्छे गुण अल्लाह के गुणों से प्राप्त होते हैं। उसने हमें पैदा किया है एवं हमें विकल्प चुनने की क्षमता दी है। अब हम या तो अनुपालन एवं इबादत का रास्ता

अपनाएं या उसके अस्तित्व का इंकार करके विद्रोह और अवज्ञा का मार्ग चुनें।

अल्लाह ने मनुष्य एवं जिन्न को दूसरी सभी सृष्टियों से विकल्प को चुनने के मामला में अलग किया है। और मनुष्य अलग है बिना किसी संत या पुजारी की मध्यस्थता के सीधे सारे संसारों के रब का रुख़ करने के मामले में, केवल इंसानी इरादे से निष्ठा के साथ अल्लाह की इबादत करने में और इस बात पर पूर्ण विश्वास रखने में कि अल्लाह का कोई साझी नहीं है, न बच्चा है, न वह किसी मनुष्य, जानवर, बुत और या किसी पत्थर की स़ूरत में प्रकट होता है। और इस प्रकार इनसान सृष्टिकर्ता की हिक्मत को सिद्ध करता है जिस हिकमत के तहत उस ने मनुष्य को सृष्टियों में श्रेष्ठता दी।

इच्छा और चुनने की क्षमता अपने आप में एक वरदान है, अगर इसका सही और सत्य पथ में उपयोग किया जाए, और यह एक अभिशाप है अगर इसका भ्रष्ट इरादों और उद्देश्यों के लिए इसतेमाल किया जाए।

सृष्टिकर्ता के लिए यह संभव था कि वह हमें अनुपालन एवं इबादत के लिए विवश करता, लेकिन

विवश करने से मानव सृष्टि से अपेक्षित उद्देश्य प्राप्त नहीं होता।

वर्जित वृक्ष से खाने के कारण अल्लाह ने जब आदम -अलैहिस्सलाम- के पश्चाताप को स्वीकार किया, तो अल्लाह ने मानव को सिखाया कि यह मानव के लिए सारे संसारों के रब की ओर से पहली क्षमा थी, और यह कि विरासत में मिले पाप का कोई अर्थ नहीं है। कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने गुनाह का स्वयं ज़िम्मेदार है। यह सारे संसारों के रब की ओर से हम पर कृपा है। मनुष्य बिना किसी पाप के साफ़ सुथरा पैदा होता है और वह वयस्क होने के बाद अपने कार्यों का स्वयं ज़िम्मेदार होता है।

इंसान की पकड़ उस पाप के कारण नहीं होगी जिसको उसने नहीं किया है। इसी प्रकार वह अपने ईमान और सत्कर्मों के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। अल्लाह ने मनुष्य को जीवन दिया एवं उसकी परीक्षा के लिए उसे इच्छा भी दी। वह केवल अपने कामों का ज़िम्मेदार है। आदमी अपने ज्ञान और क्षमताओं की सीमा के भीतर ही चुनने के लिए स्वतंत्र है। हिसाब-

किताब जिम्मेदारी के पाए जाने और चुनने की संभावना के अधीन है। अल्लाह किसी व्यक्ति से उसकी शक्ल एवं सामाजिक स्थिति का हिसाब नहीं लेगा। संघर्ष और लड़ाई से घिरी स्वतंत्रता, आदमी के लिए अधिक बेहतर एवं सम्मान जनक है एक इच्छा से वंचित सुखी व्यक्ति से। इच्छा के बिना हिसाब एवं प्रतिफल का कोई अर्थ नहीं है। और सर्वशक्तिमान अल्लाह के लोगों को चुनने की आज़ादी देने और फिर उन्हें बेहिसाब छोड़ देने का भी कोई तार्किक अर्थ नहीं। हिसाब ज़िम्मेदारी के अधीन है और पुनरुत्थान के दिन हमारे अस्तित्व के उद्देश्य का पूरा होना है।

मनुष्यों में नास्तिकता का विकास विभिन्न रूपों में हुआ है (उसके बहुत से रूप बन गए हैं), परन्तु यह पिछले आसमानी विधानों के मानने वालों के पूज्य की सही अवधारणा को विकृत कर देने के बाद प्रकट हुई है। एवं यह विकृत अवधारणा इस तरह जटिल हुई कि यह सृष्टिकर्ता के ऐसे ऐसे गुण बयान करती थी जो उसकी शान के योग्य नहीं थे, जैसे उसका थक जाना, आराम करना या नहीं जानना इत्यादि। जो उस सरल अवधारणा

के ख़िलाफ़ है जिसे अल्लाह तआला ने इंसानों के दिलों में बनाया है। लोगों को नास्तिक्ता की ओर धकेलने के दूसरे कारणों में से एक कारण सांसारिक तथा राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से धार्मिक लोगों और धार्मिक संस्थानों की अस्वीकार्य मांगें और आदेश है।

जीवन का मुख्य उद्देश्य क्षणिक सुख के अनुभूति से आनंदित होना नहीं है बल्कि अल्लाह को जान कर और उसकी इबादत के द्वारा गहरी आंतरिक शांति की प्राप्ति है। इश्वरी उद्देश्य की प्राप्ति शाश्वत आनंद और सच्चे सुख की ओर ले जाएगी। इस लिए जब यह हमारा मुख्य लक्ष्य होगा तो इस उद्देश्य तक पहुँचने के रास्ते में जो भी मुसीबतें एवं परेशानियाँ आँएंगी, सब आसान हो जाएंगी।

यह दुनिया एक परीक्षा है, वह केवल पास या फेल सर्टिफिकेट के साथ दुनिया से बाहर जाता है। यह भूल है कि मनुष्य दुनिया को पसंद करे। यह ऐसा ही है जैसे कोई कहे कि वह परीक्षा को पसंद करता है, उसी से

उसका लगाव है और सर्टिफिकेट नहीं चाहता है जिसको लेकर वह इस परीक्षा से निकल जाए।

जब हम समझ नहीं पाते हैं कि हवाई जहाज का इंजन कैसे काम करता है, उस समय विमान के निर्माता से उस बारे पूछना, यह सोच की कमी के कारण नहीं है, बावजूद इसके कि इंजन के काम करने के किसी भी स्टेप में विमान के निर्माता की कोई उपस्थिति नहीं है। लेकिन यह उन तंत्रों के अस्तित्व के लिए जिम्मेदार है जिन्हें हम जानते हैं। माबूद अज्ञान की कमियों को दूर करने के लिए माबूद नहीं है, लेकिन वह विज्ञान द्वारा खोजे जा रहे सभी तंत्रों के पीछे पहला कारण है।

भौतिक विज्ञान कहता है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति शून्य से हुई है, जबकि वही विज्ञान हमें बताता है कि पदार्थ न तो नष्ट होता है और न ही शून्य से उत्पन्न होता है। जिसने वैज्ञानिकों को हैरानी में डाल दिया है। चूँकि पदार्थ शून्य से नहीं बना है, तो ब्रह्मांड की उत्पत्ति शून्य से कैसे हुई? अब यहाँ धर्म की भूमिका आती है उस बात को समझाने में जिसे समझाने में विज्ञान असमर्थ साबित हुआ है। और धर्म ने उन्हें बताया कि पदार्थ नष्ट

होता है, और इसका एक महान सृष्टिकर्ता है जिसने इसे शून्य से बनाया है।

ब्रह्मांड के नियम ब्रह्मांड का एक तथ्य मात्र हैं, यह ब्रह्मांड के अस्तित्व के कारण की व्यख्या नहीं हैं। और यह क़ानूनों सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को नहीं नकारते, बल्कि अल्लाह की सृष्टि का विवरण हैं। उदाहरण स्वरूप, कोई व्यक्ति बचत संस्था में हर महीने एक राशि जमा करता है, फिर वह वर्ष के अंत में संस्था से लाभ के साथ जमा राशि को प्राप्त करने के लिए आता है। अब एकाउंटेंट उससे कहे: यह गुणन नियम, जिसका उपयोग हमने पैसे के गिनने में किया है, इसी ने आपके लिए पैसा बनाया है। क्या इसका कोई मतलब है? बग़ैर उस व्यक्ति के जिसने यह पैसा जमा किया है, बैलेंस जीरो ही रहेगा। उसी प्रकार यह दावा करना कि प्रकृति के क़ानूनों ने ब्रह्मांड को बनाया है, अक़्ल और तर्क के विपरीत है।

सिद्धांत और क़ानून चीजों के चलने का सटीक वर्णन करते हैं, परन्तु वह शून्य से किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते। गति के नियम बास्केटबॉल के प्रक्षेप

का वर्णन कर सकते हैं, लेकिन खिलाड़ी का हाथ ही गेंद को हरकत देता है। इसी प्रकार क़ानूनों को किसी अस्तित्व की आवश्यकता है जिसमें विशिष्ट बल प्रभाव डाले, किसी समय एवं किसी स्थान में। इन तत्वों के बिना इन क़ानूनों का कोई लाभ नहीं है, बल्कि असल में इनका कोई अस्तित्व ही नहीं होगा।

इंद्रधनुष बारिश पर सूरज की किरणों का प्रतिबिंब है, अब यह कहना गलत है: कि इन्द्रधनुष के नज़ारे का लुत्फ़ उठाने का फ़ायदा ही हमें सृष्टिकर्ता पर विश्वास करने को कहता है। इसी प्रकार यह विश्वास रखना भी भूल है कि विज्ञान ने उस माध्यम की खोज कर, जिसने इंद्रधनुष के रंगों को प्रकट किया, सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को बिल्कुल निरस्त कर दिया। उदाहरण स्वरूप: यदि कोई व्यक्ति रास्ते पे चल रहा हो और उससे उसका मोबाइल खो जाए। फिर उसे एक सार्वजनिक फ़ोन बुथ मिले और वह उसका उपयोग करके अपनी पत्नी से संपर्क करना चाहे। क्या उसके इस फोन की मौजूदगी से लाभान्वित होना या उसके काम के किसी यंत्र को खोज निकालना इस फोन के बनाने वाले

के न होने का प्रमाण है? या यह मालूम होता है कि इस सार्वजनिक फ़ोन का अस्तित्व हक़ीक़ी है और उसका कोई बनाने वाला है? किसी चीज़ से लाभ उठाना, उस चीज़ के बनाने वाले का इंकार नहीं करता है, बल्कि वास्तव में उसकी पुष्टि करता है। इंसान का इंद्रधनुष के सुन्दर दृश्य से लुत्फ़ उठाना और विज्ञान का उस यंत्र की खोज करना जिसने इंद्रधनुष के रंगों को ज़ाहिर किया, यह सूरज के बनाने वाले एवं बारिश को बरसाने वाले का इनकार नहीं करता है।

नास्तिकता का अंतर्विरोध इस विश्वास में निहित है कि बिग बैंग, उनकी परिकल्पना के अनुसार, बाहरी शक्ति के हस्तक्षेप के बिना हुआ था। और यह कि ब्रह्मांड बिना किसी उद्देश्य के बना था। और निरंतर अंतर्संबंध के नियमों के अनुसार, बिना किसी उद्देश्य के पैटर्न को बार-बार दोहराने की एक क्षमता मौजूद थी। हमें यह विश्वास करने के लिए कहा जाता है कि बुद्धि, निरी सोच और चेतना बिना किसी उद्देश्य के बेवकूफ, तर्कहीन स्रोतों से उत्पन्न हो सकती है। और यह विश्वास करने को कहा जाता है कि पूर्ण कार्यकारी शक्तियों

(डीएनए) वाली कोडित जानकारियों के विशाल बंडल ने खुद को बिना किसी प्रोग्रामर के लिखा, और बिना किसी कारण के। और यह मृत मुद्दा बिना किसी उद्देश्य के अचानक फिर से प्रकट हो सकता है।

ऊष्मप्रवैगिकी का दूसरा नियम कहता है कि समय रैखिक Linear रूप से चलता है, न कि चक्रीय cyclic रूप से। इस लिए गर्मी का ठंडे शरीर से गर्म शरीर में स्थानांतरित होना असंभव है। इस प्रकार यह नियम समय और संसारों के चक्रीय विचार और पुनर्जन्म के दर्शन का खंडन करता है, जिसकी ओर हिंदू, बौद्ध और पारंपरिक चीनी धर्म आह्वान करते हैं। और ये प्रमुख मूर्तिपूजक धर्म हैं जो मानते हैं कि सृष्टिकर्ता मूर्ति, पत्थर आदि के रूप में अवतरित होता है। यह नियम इस बात की पुष्टि करता है कि ब्रह्मांड का आदि और अंत है। इस प्रकार, वह आत्माओं के स्थानांतरगमन के दर्शन का खंडन करता है।

इस्लाम केवल रब को एक मानने (एक माबूद में विश्वास) का नाम नहीं है, बल्कि केवल एक अल्लाह की इबादत करने का नाम भी है। एक माबूद में ईमान का

सिद्धांत बहुत सारे धर्मों में मौजूद है। क़ुरैश के काफ़िरों (नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की क़ौम) का भी इसपर ईमान था। जब उन्हें बुतों की इबादत के बारे पूछा गया तो उन्होंने कहा: ताकि यह हमें अल्लाह से क़रीब कर दें, अतः वे अल्लाह के अस्तित्व का इंकार नहीं करते थे।

सृष्टिकर्ता ने कहा है:

"और जिन लोगों ने उसके सिवा औलिया (दोस्त) बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम उनकी इबादत केवल इस लिये करते हैं कि यह (बुजुर्ग) हमें अल्लाह के निकट कर देंगे"।

सूरा अल-जुमर: 3

यह सब सृष्टिकर्ता की वास्तविक अवधारणा को न समझ पाने के कारण हुआ, जिसके कारण दिमागों में उलझनें पैदा हुईं तो लोगों ने नास्तिक्ता में पनाह ले ली और सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के कारणों के संबंध में तथा उसके अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले अन्य प्रश्न पूछने लगे।

सृष्टिकर्ता ने कार्य-कारण का नियम बनाया अतः वह इसके अधीन नहीं है। इसका अर्थ है कि वह हर चीज से पहले था, और हर चीज के बाद होगा, और कोई भी प्राणी उसका घेरा नहीं कर सकता है। इसी लिए वह नहीं बदलता है। और समय के उन चरणों से नहीं गुजरता है जिनसे हम समय के अधीन होने के कारण गुज़रते हैं। वह न थकता है और न उसे अपने आपको किसी भौतिक रूप देने की जरूरत है। हम उसे देख नहीं सकते, इसलिए कि हम ज़माना एवं स्थान से घिरे हुए हैं। उदाहरण स्वरूप वह व्यक्ति जो बिना खिड़की वाले किसी कमरे में बैठा हो, यदि वह बाहर की चीज़ देखना चाहे तो उसे कमरा छोड़कर बाहर आना होगा। इसके बावजूद कि अल्लाह जो चाहता है करता है और उसके पास अपार क्षमता है, हमारे लिए इस बात को स्वीकार करना अनिवार्य है कि वह अपनी शान के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करता है। वह इन सब से ऊँचा एवं बुलंद है।

यदि ब्रह्मांड में जो कुछ है सब सृष्टिकर्ता के नियंत्रण में है तो वही व्यापक जानकारी, पूर्ण ज्ञान और सब कुछ अपनी इच्छा के अधीन करने की क्षमता और

शक्ति रखता है। सृष्टि की शुरुआत से ही सूर्य, ग्रह और आकाशगंगा अत्यधिक सटीकता के साथ काम कर रहे हैं और यह सटीकता और क्षमता मनुष्य के निर्माण पर समान रूप से लागू होती है। यदि हम मानव शरीर और उनकी आत्माओं के बीच मौजूद सामंजस्य पर विचार करें, तो यह हमारे लिए स्पष्ट हो जाता है कि इन आत्माओं को जानवरों के शरीर में वास करना संभव नहीं है और न ही वे पौधों और कीड़ों के बीच घूम सकती हैं। अल्लाह ने मनुष्य को बुद्धि और ज्ञान से प्रतिष्ठित किया, उसे पृथ्वी पर उत्तराधिकारी बनाया, उसपर कृपा की, उसे सम्मान दिया और सभी प्राणियों पर उसको श्रेष्ठता दी। एवं सृष्टिकर्ता के न्याय में से पुनरुत्थान के दिन, न्याय, स्वर्ग और नरक का अस्तित्व है, क्योंकि इस दिन सभी अच्छे और बुरे कामों को मापा और तौला जाएगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"तो जिस ने कण (ज़र्रे) के बराबर भी पुण्य (नेकी) किया होगा, वह उसे देख लेगा।

और जिस ने कण (ज़र्रे) के बराबर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा"।[सूरा अल-ज़लज़ला: 7,8]

डार्विन के कुछ अनुयायी जो प्राकृतिक चयन (एक तर्कहीन भौतिक प्रक्रिया) को एक अद्वितीय रचनात्मक शक्ति मानते हैं जो बिना किसी वास्तविक अनुभवजन्य आधार के सभी कठिन विकासवादी समस्याओं को हल करती है। बाद में उन्होंने ही जीवाणु कोशिकाओं की संरचना और कार्य में डिजाइन की जटिलता की खोज की, इसलिए उन्होंने "स्मार्ट" बैक्टीरिया, "माइक्रोबियल इंटेलिजेंस," "निर्णय लेने वाले" और "समस्या को सुलझाने वाले बैक्टीरिया" जैसे वाक्यांशों का उपयोग करना शुरू कर दिया। इस प्रकार, जीवाणु ही उनके नए देवता बन गए।[3]

प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक और रसायनज्ञ मिशेल बेहे कहते हैं:

[3]Atheism A Giant Leap of Faith. Dr. Raida Jarrar

"कोशिका की जांच के इन ढेर सारे प्रयासों के परिणामस्वरूप मैं अल्लाह के अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए मजबूर हूं। अर्थात्: आणविक स्तर पर जीवन की जांच करना, डिज़ाइन के लिए एक ज़ोरदार, स्पष्ट, तेज़ पुकार है"।

सच तो यह है कि यह विचार कि मनुष्य वानर से उत्पन्न या विकसित हुआ है, कभी भी डार्विन का विचार नहीं था। लेकिन वह कहते हैं कि आदमी और वानर एक सामान्य और अज्ञात मूल के हैं, जिसे उन्होंने (लापता कड़ी) कहा है। जिसका एक विशेष विकास हुआ और इंसान बन गया। हांलाकि हम मुसलमान डार्विन के विचार को सिरे से नकारते हैं, लेकिन उन्होंने वह नहीं कहा है जैसा कि कुछ लोग समझते हैं कि बंदर मनुष्य का पूर्वज है। यह प्रमाणित हो गया है कि डार्विन अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान रखता था, लेकिन मनुष्य के पशु मूल के होने का विचार बाद में डार्विन के अनुयायियों के द्वारा कहा गया है, जब उन लोगों ने उनके सिद्धांत में इस बात को जोड़ा दिया औ वे मूल रूप से नास्तिक थे।

डार्विन का सिद्धांत कि हम इस ब्रह्मांड में यादृच्छिक उत्परिवर्तन के परिणामस्वरूप आए हैं न कि किसी महान सृष्टिकर्ता की ओर से, यह सिर्फ एक सिद्धांत है जो अभी तक सिद्ध नहीं हुआ है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि इस सिद्धांत के रचयिता स्वयं डार्विन को इस बारे में कई संदेह थे। उन्होंने अपने संदेह और खेद व्यक्त करते हुए अपने सहयोगियों को कई पत्र लिखे थे। उन्होंने कहा: "यह कल्पना करना बहुत कठिन, बल्कि असंभव भी है कि हमारे ब्रह्मांड जैसा एक महान ब्रह्मांड, जिसमें एक ऐसी सृष्टि (अर्थात मानव) है, जो अपार मानवीय क्षमताओं से संपन्न है, उसकी शुरुआत केवल एक नमालूम संयोग से (यानी अचानक) हुई, या आवश्यकता उसकी जननी है। जब मैं अपने आस-पास इस अस्तित्व के पीछे के कारण को खोजता हूँ तो मैं किसी नोबेल तीव्रबुद्धि के अस्तित्व की बात कहने पर मजबूर हो जाता हूँ। इसलिए, मैं अल्लाह के अस्तित्व में विश्वास करता हूँ"।

विकासवाद का सिद्धांत, जिसका उद्देश्य एक निर्माता के अस्तित्व को नकारना है, यह सभी जीवित

चीजों, जानवरों और पौधों की सामान्य उत्पत्ति की बताता है। और यह कि वे एक ही पूर्वज, एकल-कोशिका वाले जीव से विकसित हुए हैं। और यह कि पहली कोशिका का निर्माण पानी में अमीनो एसिड के संयोजन का परिणाम था, जिसने फिर डीएनए की पहली संरचना बनाई, जो एक जीव के आनुवंशिक लक्षणों को वहन करता है। इन अमीनो एसिड के संयोजन से, जीवित कोशिका की पहली बनावट अस्तित्व में आई। विभिन्न पर्यावरणीय और बाहरी कारकों के परिणामस्वरूप इन कोशिकाओं का प्रसार हुआ, जिसने पहले शुक्राणु का निर्माण किया, फिर जोंक में विकसित हुआ और फिर भ्रूण में विकसित हुआ।

"अल्लाह ही ने प्रत्येक जीव धारी को पानी से पैदा किया है। तो उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं, और कुछ दो पैर पर तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे, पैदा करता है, वास्तव में, अल्लाह हर चीज़ पर सक्षम है"।

सूरा अल-नूर: 45

विज्ञान एक सामान्य वंश से विकास की अवधारणा पर ठोस सबूत प्रदान करता है, जिसका जिक्र पवित्र क़ुरआन ने किया है।

"और हम ने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई है, क्या वे ईमान नहीं लाते"। [सूरा अल-अंबिया: 30]

अल्लाह तआला ने जीवित प्राणियों को बुद्धिमान और इस तरह बनाया कि वे अपने आसपास के वातावरण के अनुकूल हों एवं वह आकार, शक्ल तथा लंबाई में विकसित हो सकें। उदाहरण के लिए, ठंडे देशों में भेड़ों का एक विशिष्ट आकार और खाल होती है जो उन्हें ठंड से बचाती है, तथा ऊन मौसम के तापमान के अनुसार बढ़ता या घटता है। जबकि दूसरे देश इसके विपरीत हैं। आकार और प्रकार वातावरण के अनुसार भिन्न होते हैं। यहाँ तक कि मनुष्य भी अपने रंग, गुण, भाषा और आकार में भिन्न होते हैं, कोई भी मनुष्य दूसरे जैसा नहीं होता है। लेकिन वे इंसान ही रहते हैं, वे जानवरों की दूसरी शक्ल में बदल नहीं जाते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और उस की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन को पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का अलग-अलग होना भी है, निसंदेह इस में जानने वालों के लिए निशानियाँ मौजूद हैं"।

सूरा अल-रूम: 22

प्रसिद्ध विकासवादी वैज्ञानिक जूल्स दीवंत अपनी पुस्तक The Ascent of Nature in Darwin's Descent of Man" p. 295: में कहते हैं:

"डार्विन का दृढ़ विश्वास था कि महिलाओं की स्थिति पुरुषों की तुलना में बहुत कम है, खासकर जब अस्तित्व के संघर्ष की बात हो रही हो। वह बेवकूफ़, विकलांग, पिछड़ों और स्त्री को एक ही स्थान पर रखते थे। उनका विचार था कि एक महिला के मस्तिष्क का आकार और उसकी मांसपेशियों की मात्रा, एक पुरुष की तुलना में, उसे पुरुष के साथ अस्तित्व के संघर्ष में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देती है। बल्कि, वह महिला के अंदर एक तरह की जैविक कमी देखते थे, जिसे दूर नहीं किया जा सकता है"।

यह वास्तव में एक (भौतिक) विरोधाभास है जो विकासवाद के सिद्धांत के अनुयायियों और नास्तिकों के विश्वासों को प्रकट करता है, विशेष रूप से उनके जो इस्लाम में (महिलाओं) की स्थिति पर आपत्ति जताते हैं। वह महिला जिसे अल्लाह तआला ने सृष्टि में मर्द के जैसा ही रक्खा है, वह उसी से बनाई गई है, आदमी का दिल महिला में अटका रहता है और महिला का हिर्दय आदमी में लगा रहता है।

महान अल्लाह ने कहा है:

"तथा उसकी निशानियों में से यह (भी) है कि उस ने तुम्हारे लिए, तुम्हीं में से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो, तथा तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया उत्पन्न कर दिया, वास्तव में, इसमें कई निशाननियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो सोच- विचार करते हैं"।

सूरा अल-रूम: 21

673 ईस्वी में फ्रांस में एक यूरोपीय सम्मेलन आयोजित किया गया क्या महिलाओं की क़ानूनी प्रकृति का निर्धारण करने के लिए कि क्या महिला

इंसान है या जानवर, अगर वह इंसान है, तो क्या उसे सभी अधिकारों का लाभ मिलना चाहिए या नहीं? और यदि जानवर है, तो उसे अधिकारों का लाभ नहीं मिलना चाहिए। जोरदार चर्चा के बाद, उन्होंने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला कि महिलाएं इंसान हैं, लेकिन उन्हें अधिकारों का लाभ नहीं मिलेगा। विकासवाद के सिद्धांत के संस्थापक पर इस सम्मेलन का प्रत्यक्ष प्रभाव और इसके विश्वासियों के विश्वासों पर इसका प्रभाव स्पष्ट है। यह अन्य सभी आस्थाओं पर इस्लाम की आस्था और उसके क़ानून की श्रेष्ठता का भी प्रमाण है। साथ ही मानव रचित क़ानूनों और सिद्धांतों पर भी इस्लाम की श्रेष्ठता सिद्ध होती है, जो महिला की मानवता और उकी गरिमा को कम करते हैं, उसे एक सस्ता और नग्न वस्तु और लुत्फ़ लेने की चीज़ मानते हैं, जैसा कि इतिहास और वास्तविकता इसके प्रमाण हैं। बौद्धिक और नैतिक पतन के प्रमाण के तौर पर हमारे लिए यह सम्मेलन पर्याप्त है।

जर्मन डार्विनवादियों ने मानव जीवन की पवित्रता को नष्ट करने के लिए डार्विन के सिद्धांत का

प्रयोग किया। डार्विन के सिद्धांत के आधार पर, जिसमें कहा गया है कि विकलांग लोग जीने के लायक़ नहीं हैं, एडॉल्फ हिटलर ने सुझाव दिया कि "असाध्य रोग से छुटकारा पाने के लिए "युद्धकाल सबसे उपयुक्त समय है"। तो बहुत से जर्मनियों ने ऐसे व्यक्तियों की याद दिलाना नहीं चाहा जो "शुद्ध वंशज" की अपनी अवधारणा पर खरे नहीं उतरते थे। शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांगों को समाज के लिए "बेकार" और आर्य जीन की शुद्धता के लिए ख़तरा के रूप में चित्रित किया गया। और अंत में यह तै हुआ कि उन्हें जीने का अधिकार नहीं है। द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत में, मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को "टी-4", या "इच्छामृत्यु" नामक कार्यक्रम में मारने के लिए लक्षित किया गया। फिर पीड़ितों की लाशों को बड़ी भट्टियों में जलाया गया।

बहुत सारे समकालीन भौतिकवादी दार्शनिकों के नास्तिक्ता अपनाने के पीछे आपदाओं, बुराई और कष्ट का अस्तित्व था। उन्हीं में से एक दार्शनिक "एंथोनी फ्लेव" हैं। उन्हों ने अपनी मृत्यु से पहले अल्लाह के

अस्तित्व को स्वीकार किया एवं एक पुस्तक लिखी जिसका नाम "माबूद (पूज्य) है" रखा। जबकि वह बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नास्तिकता के नेता थे। उन्होंने पूज्य के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए कहा:

"मानव जीवन में बुराई और पीड़ा की उपस्थिति माबूद के अस्तित्व को नकारती नहीं है, लेकिन यह हमें इश्वरी गुणों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती है"।

एंथनी फ्लेव का मानना है कि इन आपदाओं के कई सकारात्मक पहलू भी हैं। जैसा कि यह किसी व्यक्ति की भौतिक क्षमताओं को उभारती हैं, इसलिए वह कुछ ऐसा आविष्कार करता है जो उसे सुरक्षा प्रदान करता है। यह उसके सर्वोत्तम मनोवैज्ञानिक लक्षणों को भी उभारती हैं, और उसे लोगों की मदद करने के लिए प्रेरित करती हैं। पूरे इतिहास में मानव सभ्यताओं के निर्माण में बुराई और दर्द का भी योगदान रहा है। वह कहते हैं:

"इस दुविधा की व्याख्या करने के लिए कितने भी प्रस्ताव क्यों न हों, धार्मिक व्याख्या सबसे स्वीकार्य

और जीवन की प्रकृति के सबसे अधिक अनुकूल रहेगी"।

सारे संसारों के रब के गुणों में से एक हिक्मत है, वह बिना किसी उद्देश्य या मक़सद के किसी चीज़ को व्यर्थ पैदा नहीं करता है। उसने हमें हमपर दया करने, खुशी देने और हमें प्रदान करने के लिए पैदा किया है। सभी सुन्दर मानवीय गुण उसी के गुणों से निकले हैं। और इस संसार में हमारा अस्तित्व एक उच्च उद्देश्य और मतलब के लिए है, और वह है अल्लाह तआला की जानकारी और पश्चाताप के द्वारा उसकी ओर रुख़ करना और सीधे उससे सहायता मांगना।

संसार के रब का ज्ञान उसके सबसे सुंदर नामों और सर्वोच्च गुणों के ज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। वे मुख्य रूप से दो भागों में बांटे जा सकते हैं। वे हैं: जमाली नाम: यह वह हर गुण हैं जो दया, क्षमा और नरमी से संबंधित हैं, उन्हीं में रहमान (सबसे दयालु), रहीम (सबसे कृपावान), रज़्ज़ाक़ (जीविका प्रदान करने वाला), वह्हाब (दाता), बर (एहसान करने वाला), रऊफ (मेहरबान) आदि शामिल हैं। और

जलाली नाम: और यह ताकत, (क्षमता, महानता और प्रतिष्ठा से संबंधित गुण हैं, जिसमें अज़ीज़ (सब पर ग़ालिब आने वाल) जब्बार (ज़बरदस्त), क़ह्हार (सर्वशक्तिमान), काबिज़ (रोकने और कम करने वाला), खाफिज़ (नीचा करने वाला) आदि शामिल हैं।

महान अल्लाह के गुणों के बारे में हमारा ज्ञान, हम पर अनिवार्य करता है कि हम उसकी इबादत इस तरह से करें कि उसकी महिमा, उसकी बड़ाई बयान करने और उसको उन चीज़ों से पाक करने के अनुकूल हो, जो उसकी महिमा के योग्य न हों। उसकी दया की उम्मीद रखते हुए एवं क्रोध और दंड से बचने के लिए। उसकी इबादत उसके आदेशों का पालन करने, निषेधों से बचने, सुधार के कार्य करने और धरती को आबाद करने के द्वारा हो सकती है। इस विश्वास के आधार पर सांसारिक जीवन मनुष्य के लिए केवल एक परीक्षा है। ताकि वे विशिष्ट हो सकें, अल्लाह धर्मपरायणों के द्रजे को बढ़ाए, और इस तरह वे धरती की खिलाफत और परलोक में जन्नत के लायक बन सकें। दूसरी ओर

बिगाड़ पैदा करने वाले इस संसार में अपमानित हों और आख़िरत में जहन्नम का अज़ाब उनका ठिकाना हो।

सृष्टिकर्ता ने प्रकृति के नियमों और उन क़ानूनों को निर्धारित किया जो प्रकृति को नियंत्रित करते हैं और भ्रष्टाचार या पर्यावरणीय दोष प्रकट होने पर स्वयं को संरक्षित करते हैं। और इस संतुलन को बनाए रखते हैं पृथ्वी को सुधारने और जीवन को बेहतर तरीके से जारी रखने के उद्देश्य से। जो लोगों और जीवन को लाभ पहुंचाता है, वही धरती पर बाक़ी रहता है। जब धरती पर आपदाएँ आती हैं, और लोग उनसे प्रभावित होते हैं, जैसे रोग, ज्वालामुखी, भूकंप और बाढ़, तो अल्लाह के नाम एवं गुण प्रकट होते हैं, जैसे उदाहरण स्वरूप शाफ़ी (शिफ़ा देने वाला) और हफ़ीज़ (सुरक्षा देने वाला), यह उस समय प्रकट होते हैं जब वह किसी बीमार को शिफ़ा देता और किसी को बचाता है। इसी प्रकार उसका नाम अदल (न्याय करने वाला) उस समय सामने आता है जब वह ज़ुल्म करने वाले या गुनाहगार को सज़ा देता है। इसी प्रकार हकीम (ज्ञान वाला) जो अच्छे इनसान को आज़माता है, जिसपर यदि वह धैर्य रखे तो उसे प्रतिफल

मिलेगा और यदि धैर्य न रखे तो अज़ाब। इस प्रकार, मनुष्य इन परीक्षाओं के माध्यम से अपने प्रभु की महानता को पूरी तरह से जान जाता है, जिस प्रकार उपहारों के माध्यम से वह उसकी सुंदरता को पहचानता है। इस लिए यदि कोई व्यक्ति केवल दैवी सौंदर्य के गुणों को जाने, तो उसने अल्लाह तआला को पूरी तरह नहीं जाना।

जो भी आपदाएं आती हैं, वे अल्लाह की इच्छा से आती हैं। जो अल्लाह चाहता है, होता है, अल्लाह की इच्छा पूर्ण ज्ञान से संबंधित है, और पूर्ण ज्ञान पूर्ण भलाई से संबंधित है। चूंकि अस्तित्व में कोई पूर्ण बुराई नहीं है। यह सांसारिक जीवन जिसे मनुष्य जीता है, वह अनन्त जीवन की तुलना में केवल एक क्षण भर है। स्वर्ग के आनंद के एक क्षण के सामने दुनिया की सभी मुसीबतें एवं परेशानियाँ कुछ भी नहीं हैं।

उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को तब तक मारता है जब तक कि वह हिलने-

डुलने की क्षमता नहीं खो देता, तो यह अत्याचार है, और अत्याचार बुरा है।

लेकिन जो छड़ी लेकर दूसरे को पीटता है, उसमें शक्ति का होना कोई बुराई नहीं है।

इच्छा का अस्तित्व, जो अल्लाह ने उसे दी है, बुराई नहीं है।

उसके पास हाथ हिलाने की क्षमता होना भी बुराई नहीं है।

लाठी में मारने का गुण होना भी बुराई नहीं है।

ये सभी अस्तित्वगत चीजें अच्छी हैं, यह बुराई के चरित्र को तब तक प्राप्त नहीं करती हैं जब तक कि किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए इनका दुरुपयोग न किया जाए, और पिछले उदाहरण में वह पक्षाघात है। इस उदाहरण के आधार पर बिच्छू और सांप की उपस्थिति अपने आप में कोई बुराई नहीं है, जब तक कि कोई व्यक्ति इसे न छेड़े. और यह उसे डंक न मार ले। अल्लाह तआला के कार्यों में बुराई नहीं ढूँढ़ी जाती, वे तो सबके सब अच्छे हैं, लेकिन इसके प्रभाव में बुराई है,

जो परिणाम है मानव के द्वारा इस अच्छी चीज़ को ग़लत इस्तेमाल करने का। कभी कभी अल्लाह तआला इस बुराई को होने की अनुमति देता है क्योंकि उसके कारण अच्छाई होती है , जैसा कि तौबा करना और अल्लाह की ओर लौटना, आदि। इस तरह यह (बुराई) शिफ़ा के लिए कड़वी दवा पीने की तरह है।

सृष्टिकर्ता के बारे में अक्सर पूछे जाने वाला प्रश्न, कि वह मनुष्यों को ऐसा जीवन जीने के लिए मजबूर करता है, जिसे वे जीना नहीं चाहते, यह एक निराधार प्रश्न है। यदि अल्लाह सृष्टि के कार्य में अपनी रचना (जैसे इनसान) की राय लेना चाहे, तो पहले ही से रचना (इनसान) का अस्तित्व में होना अनिवार्य होगा। अब सवाल यह है कि कैसे मनुष्यों की कोई राय हो सकती है, जबकि उनका अस्तित्व था ही नहीं? यहाँ मुद्दा अस्तित्व और अनस्तित्व का है। इनसान का जीवन से लगाव और उसके बारे में उसका डरना, जीवन की इस नेअमत से उसकी संतुष्टि का सबसे बड़ा प्रमाण है। और जीवन की यह नेअमत मानव जाति के लिए एक परीक्षा है ताकि अपने रब से राज़ी होने वाले अच्छे

इंसान को उस बुरे इंसान से अलग किया जाए जो उससे नाराज़ है। सृष्टि से सारे संसारों के रब की हिक्मत का तक़ाज़ा यह था कि जो लोग उससे संतुष्ट हैं, उन्हें परलोक में सम्माननीय घर प्रदान करे। अल्लाह ने पुष्टि की है कि मनुष्य द्वारा अमानत का वोझ उठाए जाने के बाद, उसने ब्रह्मांड में उनको भेजने से पहले सब को जमा किया और उनसे अपने एक होने की गवाही ली।

"तथा (वह समय याद करो) जब आपके पालनहार ने आदम के संतानों की पीठों से उनकी संतति को निकाला और उन्हें स्वयं उनपर साक्षी (गवाह) बनाते हुए कहाः क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सबने कहाः क्यों नहीं? हम (इसके) साक्षी हैं; ताकि प्रलय के दिन ये न कहो कि हम तो इससे असूचित थे"।[सूरा अल-आराफ़: 172]

जिस दिन अल्लाह के लिए एक होने की गवाही दी गई, उस दिन का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब मनुष्य को -मोमिन हो या गैर मोमिन- सख़्त भय का सामना होता है, तो मदद के लिए, एहसास के बिना ही, उसकी आँखें आसमान की ओर उठ जाती हैं।

जहाँ तक उस गवाही के दिन को याद न कर पाने की बात है, तो वह इस लिए कि यदि इंसान को यह याद हो कि वह अल्लाह के सामने खड़ा हुआ था और गवाही दी थी कि उसके अलावा कोई माबूद नहीं है। फिर वह इंसान किसी युग या स्थान में, इस धरती पर अपने आपको पाए तो अस़ल में कोई परीक्षा ही नहीं होती। परीक्षा की बुनियाद ईमान से संबंधित है एवं ईमान की बुनियाद परोक्ष पर ईमान से संबंधित है। यदि परोक्ष को देख लिया जाए, महसूस हो और सभी लोगों के दिमाग में हाज़िर हो तो वह परोक्ष, परोक्ष नहीं रहता। और इस प्रकार परीक्षा का भी कोई अर्थ बाक़ी नहीं रहता है एवं आज़माए जाने का एहसास सिरे से ख़ारिज हो जाता है। यदि सभी लोगों के पास अल्लाह के अस्तित्व, पूर्ण सत्य एवं परलोक का निश्चित ज्ञान (पूरा विश्वास) हो तो परीक्षा फिर कैसी!

उदाहरण के लिए, यदि हम मान लें कि छात्रों के एक समूह ने परीक्षा हॉल में प्रवेश किया और परीक्षा शुरू हुई। तो परीक्षा समाप्त होने तक किसी भी छात्र को उस स्रोत को देखने की अनुमति नहीं दी जाती है,

जिससे उसने याद किया है। क्योंकि उस स्रोत को देखने से परीक्षा का अर्थ ही ख़त्म हो जाता है।

प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट कहते हैं:

"महसूस से परे दुनिया को समझने में हमारी अक्षमता कोई कमी नहीं है, बल्कि नैतिकता की स्थापना के लिए एक आवश्यक शर्त है। यदि किसी व्यक्ति को निरपेक्ष का प्रत्यक्ष ज्ञान होता, तो वह अपने कार्यों में स्वतंत्र और स्वैच्छिक नहीं होता"।

इसी कारण हमें उस दृश्य को याद करने की अनुमति नहीं दी गई जो वादे की दुनिया (जब इनसानों से उन के रब ने वादा लिया उन की सृष्टि से पहले) में हुआ ताकि विकल्प का एक अर्थ हो। लेकिन केवल वह वादा पर्याप्त तर्क नहीं है उस व्यक्ति को दंड देने के लिए जिसके पास अल्लाह का पैग़ाम न पहुँचा हो। तर्क जो फ़र्ज़ (यानी इसलाम के आदेश-निषेध) और प्रतिफल को अनिवार्य करता है, उसी इंसान पर क़ायम होता है जिसके पास नबियों का पैग़ाम पहुँचा हो, जो एक अल्लाह पर ईमान लाने एवं उसके साथ किसी को साझी न ठहराने का आह्वान करता है। फिर यदि अज्ञा

पालन करे तो उसका बदला दिया जाएगा और यदि अवज्ञा करे तो उसकी सज़ा दी जाएगी।

अतः ईमान तर्क पर आधारित है, जितने अधिक तर्क होंगे उतना ही ईमान व यक़ीन बढ़ता जाएगा। परन्तु ग़ैब को कभी भी इंद्रियों द्वारा देखा नहीं जा सकता, वरना ईमान का मतलब ही ख़त्म हो जाएगा।

हम औसत आयु में स्वास्थ्य की अवधि की बीमारी की अवधि से तुलना कर सकते हैं, या समृद्धि और उन्नति के कुछ दशकों की तुलना तबाही और विनाश की अवधियों के साथ कर सकते हैं, इसी प्रकार प्रकृति की सदियों की शांति और स्थिरता की तुलना भूकंपों तथा ज्वालामुखियों के विस्फोट के साथ कर सकते हैं। इस भलाई की शुरूआत कहां से हुई? अराजकता और संयोग पर आधारित दुनिया एक अच्छी दुनिया का निर्माण नहीं कर सकती। मनुष्य को स्वास्थ्य का स्वाद तब तक महसूस नहीं होता है, जब तक कि वह बीमारी का अनुभव न कर ले और कोई ख़ूबसूरती को उस समय तक नहीं जान सकता है जब तक कि वह बदसूरती को न देख ले।

ऊष्मप्रवैगिकी के दूसरे नियम में कहा गया है कि बिना किसी बाहरी प्रभाव के एक पृथक प्रणाली में कुल एन्ट्रापी (विकार या यादृच्छिकता का स्तर) लगातार बढ़ती रहेगी, और यह प्रक्रिया अपरिवर्तनीय है। दूसरे अर्थ में, व्यवस्थित चीजें लगातार बिखरती और ग़ायब होती जाएंगी जब तक कि बाहर से कोई चीज़ उन्हें एकत्रित न करे। इस तरह से, अंधी थर्मोडायनामिक शक्तियां कभी भी स्वयं कुछ अच्छा नहीं कर सकती थीं, न ही व्यापक रूप से अच्छी हो सकती थीं जैसी वे हैं, निर्माता द्वारा इन यादृच्छिक घटनाओं को विनियमित किए बिना जो सुंदरता, ज्ञान, आनंद और प्रेम जैसी अद्भुत चीजों में प्रकट होती हैं। यह सब केवल यह साबित करने के बाद कि नियम अच्छाई का होना है, और बुराई तो अपवाद (exception) है।

बुराई और कष्ट के बारे में हमारा दृष्टिकोण सांसारिक जीवन की वास्तविकता और उसमें मानव अस्तित्व के उद्देश्य के बारे में हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है, जो भौतिकवादियों एवं धार्मिकों के निकट

अलग अलग है। भौतिकवादी दृष्टिकोण मानता है कि इस संसार के जीवन के पीछे कोई उद्देश्य नहीं है, जो उद्देश्य इस जीवन को संचालित करता हो, जब मनुष्य मरता है तो सब कुछ ख़त्म हो जाता है एवं इस जीवन के बाद कोई जीवन नहीं है। इस लिए इंसान को चाहिए कि वह इस दुनिया में जितना सुख प्राप्त कर सकता हो, कर ले। इस कारण वह जो भी दर्द महसूस करता है, और जो कुछ भी उसे इन सुखों को प्राप्त करने से रोकता है, वह एक निर्विवाद बुराई हो जाती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, एक व्यक्ति जिन बुराइयों और पीड़ाओं का सामना करता है, वे यादृच्छिक चीजें हैं, जिनसे वह अपने जीवन के दौरान एक ऐसी दुनिया में गुजरता है जो स्वयं एक यादृच्छिक तरीके से उत्पन्न हुई है। फिर यह कहना कि एक माबूद है जो केवल दया और प्रेम है, जो इस जीवन को नियंत्रित करता है, उन नास्तिकों के अनुसार बकवास और बेतुकी बात बन जाती है। उनके अनुसार हर वह चीज़ जो उन्हें सुख प्राप्त करने से रोकती है, वह कष्ट है, यह उसी प्रकार है जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता को बुरा समझता है जब वे उसे उसके दादा की दवा खाने से रोकते हैं।

मनुष्य को पहले खुद को देखना चाहिए, इससे पहले कि घमंड उसे सच्चाई से दूर ले जाए। उसके चारों ओर विज्ञान और तकनीक का कितना ही विकास क्यों न हो जाए, मनुष्य स्वयं को दूसरी अमर सृष्टि के रूप में विकसित नहीं कर सकता है, यहां तक कि स्वतंत्र रूप से, भोजन, पानी तथा हवा की आवश्यकता के बिना, या अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए शौचालय जाए बिना जी नहीं सकता है। मनुष्य इस विशाल अंतरिक्ष में जीवन की खोज में लगा हुआ है जो उसे स्थायित्व और खुशी प्रदान करे, जबकि वह निश्चित रूप से जानता है कि वह सुरक्षात्मक कपड़ों के बिना चंद्रमा तक नहीं पहुंच सकता है, या उस वाहन के अंदर नहीं हो सकता है जो उसे पृथ्वी के दायरे से बाहर ले जाए। और यह सब वह मौत के आ दबोचने के डर से करता है।

"आप कह दें कि पत्थर या लोहा हो जाओ, अथवा कोई उत्पत्ति, जो तुम्हारे मन में इससे बड़ी हो। फिर वे पूछते हैं कि कौन हमें पुनः जीवित करेगा? आप कह दें: वही, जिसने प्रथम चरण में तुम्हारी उत्पत्ति की

है। फिर वे आपके आगे सिर हिलायेंगे और कहेंगे: ऐसा कब होगा? आप कह दें: कि संभवता वह समीप ही है"।

सूरा अल-इसरा: 50,51

विक्टर फ्रेंकल ने कहा: "आज लोगों के पास जीने के सारे साधन मौजूद हैं, लेकिन जीने का कोई मतलब नहीं है। जो जीवन को एक कारागार बना देता है, जहाँ के निवासी जीवन और मृत्यु की दीवारों के बीच धक्कमधक्का कर रहे हैं, बिना अर्थ के जीवन में, हर डंक से डरे हुए। हर दर्द को एक यादृच्छिक घटना माना जाता है, जिसकी व्यख्या संभव नहीं, न उससे भागना मुमकिन, जिसे केवल शक्ति और पदार्थ के संदर्भ में वर्गीकृत किया जा सकता है, और अराजकता, उथल-पुथल और त्रासदी के अलावा कुछ भी नहीं दर्शाता है"।

यह दावा कि एक नास्तिक दूसरों को नुकसान नहीं पहुंचाता है और किसी व्यक्ति को बुरे कर्मों की ओर धकेलता है, जैसा कि कुछ धार्मिक लोग धर्म के नाम पर करते हैं, यह एक निराधार दावा है। धर्म अच्छी आदतों और बुरे कर्मों से बचने का आह्वान करता है।

इस प्रकार, कुछ मुसलमानों के बुरे व्यवहार उनकी सांस्कृतिक आदतों या उनके धर्म के बारे अज्ञानता और सच्चे धर्म से उनकी दूरी के कारण हैं। क्या हमने दुनिया में साम्यवाद स्थापित करने के प्रयासों के बारे में नहीं सुना है, जिसके कारण लाखों मुसलमानों और ईसाईयों की हत्या हुई? एक कम्युनिस्ट दार्शनिक कहते हैं:

"हम यह समझते थे कि हम पूज्य के बिना बेहतर हो सकते हैं, एवं मनुष्य की मनुष्यता की रक्षा कर सकते हैं, हम कितने ग़लत थे, हमने पूज्य एवं इंसान दोनों को नष्ट कर दिया"।

मानवता को लाभ पहुँचाने और पृथ्वी के निर्माण के उद्देश्य से लोगों के साथ अच्छा व्यवहार, धर्म की छत्रछाया में सृष्टिकर्ता में विश्वास और सार्वभौमिक नैतिकता के पालन से बेनियाज़ नहीं कर सकता। क्योंकि पृथ्वी का विकास और अच्छे संस्कार धर्म का उद्देश्य नहीं हैं, परन्तु वास्तव में वे दोनों साधन हैं। धर्म का लक्ष्य मनुष्य को उसके रब, फिर इनसान (की उत्पत्ति) के स्रोत, उसके मार्ग और उसके अंजाम का ज्ञान कराना है। और एक अच्छा अंत और अंजाम केवल सीधे सारे

संसारों के पालनहार की इबादत एवं आज्ञाकारिता के माध्यम से उसकी रिज़ामंदी द्वारा प्राप्त हो सकता है। और इस अंजाम का मार्ग पृथ्वी का निर्माण और अच्छा व्यवहार है।

अली इज्ज़त बेगोविच कहते हैं: मानव जीवन में एक वास्तविक घटना के रूप में मौजूद नैतिकता को तर्कसंगत रूप से समझाया नहीं जा सकता है। और शायद यह धर्म (के होने) का पहला तथा व्यावहारिक प्रमाण है। नैतिक व्यवहार या तो अर्थहीन है, या अल्लाह के अस्तित्व में इसका अर्थ है। कोई तीसरा विकल्प नहीं है। या तो हम नैतिकता को कट्टरता के ढेर समझकर छोड़ दें, या तुलना में एक और मान दर्ज करें, जिसे हम अनंत काल कह सकते हैं। जब अनन्त जीवन की शर्त पूरी हो जाएगी, और यह कि इस दुनिया के अलावा भी एक दुनिया है, और अल्लाह मौजूद है, तो मानव नैतिक व्यवहार सार्थक होगा।

मनुष्य की समानता एक नैतिक विशेषता है, न कि प्राकृतिक, भौतिक या ज्ञान संबंधित तथ्य। शारीरिक, प्राकृतिक या ज्ञान के दृष्टिकोण से लोग

निस्संदेह समान नहीं हैं। केवल सृष्टिकर्ता और धर्म में आस्था के आधार पर ही कमजोर समानता की मांग कर सकते हैं। यह कहना कि मनुष्य समान हैं, तभी संभव है जब मनुष्य अल्लाह की सृष्टि हो।

मैंने जो पढ़ा और पसंद आया: एक नास्तिक जब बुराई के अस्तित्व के कारण अल्लाह के अस्तित्व को नकारता है, तो वह स्वयं का खंडन करता है। नास्तिक स्वीकार करते हैं कि वे माबूद के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते, इस दावे की बुनियाद पर कि वे केवल भौतिक तथा महसूस की जाने वाली चीज़ में विश्वास रखते हैं। इस प्रकार, वे अदृश्य दुनिया को नकारते हैं, जिसमें फ़रिश्ते, जिन्न, आसमानी संदेश, नबी और चमत्कार शामिल हैं। इसके मुक़ाबले वे प्रकृति को स्वीकार करते हैं। और प्रकृति या पदार्थ (पर्यावरण)- उन्हीं के मानने के अनुसार- पूरी तरह से निरपेक्ष है, वह किसी अच्छाई या बुराई के अधीन नहीं है, नैतिकता के अधीन होने या उस के स्रोत होने की तो बात ही छोड़ें। यदि मनुष्य प्रकृति का ग़ुलाम है, और विशुद्ध रूप से भौतिकवादी है तो वह भी अच्छाई, बुराई

और नैतिकता के प्रति भी निरपेक्ष क्यों नहीं? एक नास्तिक कैसे अपनी नैतिकता पर गर्व कर सकता है जबकि, उसी के अनुसार, प्रकृति नैतिकता को नहीं जानती है। इसका मतलब यह है कि एक नास्तिक को जिन नैतिक अवधारणाओं पर गर्व है, वे सृष्टिकर्ता की ओर से एक उपहार हैं, जिनके अस्तित्व को वे नकारता है। हम इसी को प्रवृत्ति कहते हैं, जिसे अल्लाह ने हमारे अंदर रखा है, ताकि हम उसके संदेशों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहें, जिसको वह अपने नबियों एवं रसूलों के द्वारा हम तक पहुँचाता है। यही संदेश है। जहां तक अक़्ल की बात है, तो उसके द्वारा हम दो दुनिया के साथ संवाद करते हैं:

परोक्ष की दुनिया - क्योंकि अक़्ल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अमूर्त है - इसलिए हम आसमानी संदेशों को समझते हैं।

भौतिक दुनिया: ताकि हम नैतिक आसमानी संदेश के निर्देशों के अनुसार इसे आबाद करने में सक्षम हों।[4]

ब्रिटिश नास्तिक रिचर्ड डॉकिन्स अपनी पुस्तक "अन-नहर अल-ख़ारिज मिन जन्नति अदन" (The river from the Garden of Eden) में कहते हैं:

"प्रकृति बुरी नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य से, वह बेपरवाह है। यह किसी व्यक्ति के समझने के लिए सबसे कठिन पाठों में से एक है। हमारे लिए यह स्वीकार करना मुश्किल है कि सभी चीजें न तो अच्छी हैं और न ही बुरी, न दयालु और न ही उग्र, यह सभी मानवीय कष्टों के प्रति बेपरवाह है, क्योंकि प्रकृति का कोई उद्देश्य नहीं है"।

नास्तिकता अक़्ल को खत्म करने, तर्क और विशुद्ध स्वाभाव की उपेक्षा करने और वैज्ञानिक कल्पना पे डटे रहने का निमंत्रण है। और यह सब ज्ञान के नाम पर! अल्लाह के बिना, उसके ब्रह्मांड, उसके नियम,

---

[4] "शिफ़ा लिमा फ़ी अल-सुदूर", लेखक: डा० हैसम तलअत।

और वह विचार जो उसने हमें दिए हैं, उनके बिना ऐसा कुछ भी नहीं होगा जिस का वैज्ञानिक अध्ययन कर सकें या नास्तिक इनकार कर सकें।

अपने सृष्टिकर्ता के साथ मनुष्य का रिश्ता किसी भी रिश्ते से बेहतर और मजबूत होना चाहिए। इसलिए, एक मुसलमान को इस्लाम की शिक्षाओं को लागू करने के लिए उत्सुक होना चाहिए। और यह रिश्ता ही असली रिश्ता है जो उसे सभी भलाई एवं दूसरों का सम्मान दिलाएगा।

बहुत से लोग संदेह, खोज और बर्बादी और गुमराही के दौर से गुज़रते हैं और उन्हें पूर्ण शान्ति और आराम तब ही मिल सकता है जब वे सारे जगत के रब तक पहुँचने का रास्ता पा लें। बिल्कुल उस खोये हुए बच्चे की तरह जो अपनी माँ को ढूंढ रहा हो। जब उसे वह पा लेता है तो सुकून का अनुभव करता है और उस सुरक्षा को महसूस करता है जिसे वह तलाश कर रहा था। इसलिए, नास्तिकता सत्य तक पहुँचने में एक स्पष्ट विफलता की घोषणा है।

जब हम किसी जानवर को पालते हैं, तो सबसे अधिक आशा जो हम उससे रखते हैं, वह अज्ञाकारिता है। और यह इस लिए कि हम ने उसे केवल ख़रीदा है, उसे पैदा नहीं किया है। अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण हैं। तो हमारे सृष्टिकर्ता और पैदा करने वाले के बारे क्या कहेंगे। क्या वह हमारी अज्ञाकारिता, इबादत एवं आत्मसमर्पण के अधिकारी नहीं है। जबकि हम इस सांसारिक यात्रा में, कई मामलों में अपनी इच्छा के विरुद्ध आत्मसमर्पण कर रहे हैं। हमारे दिल धड़कते हैं, हमारा हाज़मा सिस्टम काम कर रहा है एवं हमारी इंद्रियां पूरी तरह जागरूक हैं। हमें बस इतना करना है कि हम अपने बाकी मामलों में भी अल्लाह के सामने आत्मसमर्पण करें, जिनमें हमें विकल्प दिया गया है, ताकि हम सुरक्षित तरीक़े से अमन व अमान तक पहुँच जाए।

यह कहना कि ईमान का विचार बच्चों की मनोरंजक कहानियों या सुंदर स्वप्न दर्शन की तरह है, जो किसी दुखी व्यक्ति को तसल्ली दे सकते हैं, इससे अधिक कुछ नहीं है, इस बात की कोई बुनियाद नहीं है।

एक महान सृष्टिकर्ता के अस्तित्व में ईमान, जिसने हमें एक उद्देश्य के तहत पैदा किया है, और हमारी मौत के बाद एक सदैव रहने वाली नेमत हमारी प्रतीक्षा कर रही है, यह हमारे सीने में बसी एक सच्चाई है। और यह सुंदर सत्य उस नास्तिकता के दुःस्वप्न से कहीं बेहतर है जो नास्तिक्ता मनुष्य को नाचीज़ बना देती है। जो नाचीज़ से आई है और नाचीज़ ही जिसका अंजाम है। क्या कोई नास्तिक अपने बेटे के उत्तर को स्वीकार करेगा, जब वह उससे पूछे कि वह बड़ा होकर क्या बनना चाहता है, और वह बच्चा उससे कहे कि: कुछ नहीं? वह इस जवाब को कभी स्वीकार नहीं करेगा, और अपने बेटे को काम करने, अध्ययन करने और भविष्य में एक मूल्यवान व्यक्ति बनने का प्रयास करने की ओर प्रेरित करने के लिए असंभव की भी प्रयास करेगा। यह जीवन बहुत छोटा है। और मौत अचानक आती है। हम इस दुनिया में जिस माल या औलाद के मालिक हैं वह खो जाने वाली है, या तो हम मर जाएंगे और उन्हें हम अपने पीछे छोड़ जाएंगे, या हमारी मौत से पहले, हमारी ज़िन्दगी में ही उसे खो देंगे।

जीवन एक उपन्यास के एक अध्याय के सिवा कुछ नहीं है, जिसके कई भाग हैं। मौत कहानी का अंत नहीं, शुरुआत है। मनुष्य को एक महान और उच्च उद्देश्य के लिए पैदा किया गया है, और बुद्धिमान तथा चालाक आदमी वह है जो मृत्यु के बाद के जीवन की योजना बनाता है।

अनंत की तुलना में कोई भी संख्या शून्य है। हमारा जीवन संख्याओं का एक समूह है। इनमें से एक नंबर हमारी जिंदगी से हर रोज़ कम हो रहा है। भले ही हम सौ या दो सौ साल जीते रहें, वह अनंत की तुलना में शून्य हैं। बीमारी से हो या बिना बीमारी के, मौत जीवन के किसी भी पड़ाव में आकर रहेगी। मौत का समय निर्धारित है। हम लोग शून्य में जी रहे हैं। नास्तिक ने अच्छी तरह अल्लाह को नहीं जाना, यदि वह अल्लाह को अच्छी तरह जान पाता तो वह उसपर ईमान लाने एवं उसके सामने आत्मसमर्पण करने से इंकार नहीं करता। अल्लाह के गुणों के बारे में उनकी अज्ञानता ने उन्हें ऐसा बनाया कि वह अल्लाह के साथ ऐसा व्यवहार करता है, जैसे कि वह उनके सामने एक इंसान

हो, उसी की तरह उसमें गुण ढूढ़ते हैं, और वे सृष्टिकर्ता पर ईमान लाने के लिए उसको देखने को आवश्यक बताते हैं। क्या हम अनंत की तुलना में शून्य को प्राथमिकता देंगे?

किसी भी नाटक को अंत तक देखे बिना हमारे लिए उसे आंकना तर्कसंगत नहीं होगा, और न ही किसी किताब को ठुकराना, क्योंकि उसके पहले पेज ने हमें आकर्षित नही किया। यह फ़ैसला अधूरा माना जाएगा।

अभी भी अवसर मौजूद है जबतक इंसान जीवित है। और वह अवसर है एक सृष्टिकर्ता पर ईमान लाने का, जिसकी बादशाहत में उस का कोई साझी नहीं और न उसकी औलाद है। वह किसी मनुष्य, जानवर, मूर्ति या पत्थर की सूरत में प्रकट नहीं होता है। वह मौक़ा है सीधे सृष्टिकर्ता की आराधना करने का, आवश्यकता पड़ने पर उसका सहारा लेने और पाप करते समय सीधे उसी के सामने पश्चाताप करने का, बिना संत, पुजारी या किसी मध्यस्थ के।

यही वह धर्म है जिसे इस्लाम धर्म के नाम से जाना जाता है।

तो, इस दुनिया का जीवन एक शाश्वत यात्रा की शुरुआत है, जिसे मनुष्य मृत्यु के बाद पुनरुत्थान, हिसाब फिर प्रतिफल के साथ दोबारा शुरू करेगा, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है। इस्लाम मानता है कि इस दुनिया में हमारा अस्तित्व एक उच्च लक्ष्य और उद्देश्य के लिए है, जो कि अल्लाह तआला को जानना, उसकी इबादत करना और किसी मध्यस्थ के बिना सीधे उसी में ध्यान लगाना है।

"प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है और तुम्हें, तुम्हारे कर्मों का प्रलय के दिन भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा, तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया, तो वह सफल हो गया, तथा सांसारिक जीवन धोखे के सामान के सिवा कुछ नहीं है"।[सूरा आल-ए-इमरान: 185]

इस्लाम धर्म को अपनाना बहुत आसान और सरल है। बस अल्लाह के एक मात्र सत्य माबूद होने एवं मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के रसूल होने की गवाही देने एवं उसके तक़ाज़े के अनुसार काम करने की आवश्यकता है। ईमान की गवाही के रूप में जाना

जाने वाला एक वाक्य कहकर इसलाम क़बूल किया जाता है, जो है:

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ "

لَهُ، وأشهدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ" (मैं (गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, तथा गवाही देता हूँ कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- उसके बंदे तथा रसूल हैं।)

और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सभी रसूल सच्चे हैं।

तथा मैं गवाही देता हूं कि स्वर्ग सत्य है और नर्क सत्य है।

जानकारियाँ:

मध्य पूर्व में ईसाई, यहूदी और मुसलमान "इलाह" (माबूद, पूज्य) को संदर्भित करने के लिए "अल्लाह" शब्द का उपयोग करते हैं, जिसका अर्थ है एक सत्य माबूद, मूसा और मसीह का माबूद। सृष्टिकर्ता ने पवित्र क़ुरआन में "अल्लाह" और अन्य नामों और विशेषताओं के द्वारा अपना परिचय दिया है। शब्द "अल्लाह" का उल्लेख "अहदे क़दीम" के पुराने संस्करण में 89 बार (सिफ़रे तकवीन 2:4) और कई अन्य किताबों में किया गया है। आज कुछ विद्वानों ने संस्कृत भाषा की हिंदू पुस्तकों के प्राचीन संस्करणों में एक और एकमात्र माबूद के संदर्भ में (अल्लाह) शब्द के उपयोग के बारे में बात की है। (Allah" in Rigveda Book 2 Hymn I verse II)

पवित्र क़ुरआन सृष्टिकर्ता की ओर से भेजी जाने वाली अंतिम पुस्तक है, जैसा कि मुसलमान क़ुरआन से पहले भेजी गई सभी किताबों की मूल प्रतियों में विश्वास करते हैं, (इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- के स़हीफ़े, ज़बूर, तोराह और इंजील, और अन्य)। मुसलमानों का मानना

है कि सभी किताबों का मूल संदेश शुद्ध एकेश्वरवाद था (अल्लाह पर ईमान, सीधे उसकी इबादत करना, संत या पुजारी के माध्यम से नहीं, यह मानना कि उसकी कोई संतान नहीं है, तथा मानव या पत्थर के रूप में वह प्रकट नहीं होता है)। परन्तु पिछली आसमानी पुस्तकों के विपरीत, क़ुरआन किसी विशेष समूह या संप्रदाय के लिए नहीं आया है, इसकी कई विभिन्न प्रतियां नहीं हैं और न इसमें कोई बदलाव आया है। बल्कि सभी मुसलमानों के लिए एक प्रति है। क़ुरआन हर किसी के लिए उपलब्ध है, क्योंकि इसे नमाज़ों में पढ़ा जाता है और इससे जीवन के सभी मामलों में रोशनी प्राप्त की जाती है। दुनिया भर के मुसलमान क़ुरआन का पाठ बिना बदलाव के उसी तरह करते हैं, जिस तरह पैगंबर मुहम्मद -उनपर शांति व दया हो- एवं उनके साथियों के ज़माने में पढ़ा जाता था। क़ुरआन के पाए जाने वाले वर्तमान अनुवाद केवल क़ुरआन के अर्थों का अनुवाद हैं।

पवित्र क़ुरआन के कई छंदों (आय़तों) में खुद को व्यक्त करने के लिए सृष्टिकर्ता द्वारा "हम" शब्द का

उपयोग अरबी भाषा में शक्ति और महानता को व्यक्त करता है। इसके अलावा अंग्रेजी में इसे "We रॉयल" कहा जाता है जहां बहुवचन सर्वनाम का उपयोग किसी व्यक्ति को उच्च पद (जैसे राजा, सम्राट या सुल्तान) में संदर्भित करने के लिए किया जाता है। परन्तु, क़ुरआन ने हमेशा उबूदियत (दासता) के संबंध में अल्लाह के एक होने पर ज़ोर दिया है।

स्रोत:

लिमाज़ा अल-दीन? रिहलतुम मिन अल-ज़ाकिरह, फ़ातिन सब्री

www.fatensabri.com

"शिफ़ा लिमा फ़ी अल-सुदूर", लेखक: डा० हैसम तलअत

वह्मु अल-इलहाद, लेखक डा० अम्र शरीफ़

लेख: रद्द अल-क़ुरआन अला अल-मुलहिद स्टीफन हॉकिंग फ़ी नफ़ी अल-रूह व अल-ख़ालिक़, लेखक डा० महमूद अब्दुल्लाह इब्राहीम नजा

www.islamhouse.com

www.quranenc.com

लेखक की पुस्तकें:

अल-रिसालतु अल-हक़ीक़ीय्यतु लिल-मसीह अलैहिस्सला फी अल-क़ुरआन व अल़-इंजील, 2017, अंग्रेजी में प्रकाशित और 15 भाषाओं में अनुवादित।

अल-मफ़हूमु अल-हक़ीक़ी लिल-इलाहि, 2018, अंग्रेजी में प्रकाशित और 7 भाषाओं में अनुवादित।

लिमाज़ा अल-इस्लाम? अंग्रेजी में प्रकाशित और 13 भाषाओं में अनुवादित।

ऐन अला अल-हक़ीक़ति, 2020, अंग्रेजी में प्रकाशित और 4 भाषाओं में अनुवादित।

लिमाज़ा अल-दीन? रिहलतुम मिन अल-ज़ाकिरह, 2021, फ़ातिन स़ब्री, अरबी भाषा में प्रकाशित एवं अंग्रेजी में अनुवादित।

हल अल-क़ुरआन कलामु अल्लाह? 2021, अरबी में प्रकाशित।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है और उसका कोई साझी नहीं है।

और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बंदे और रसूल हैं

और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सभी रसूल सच्चे हैं।

तथा मैं गवाही देता हूं कि स्वर्ग सत्य है और नर्क सत्य है।

विषय सूची